सूची शब्दों की

सूची शब्दों की

सूची शब्दों की

कबीर शब्दावली

दूसरा भाग

उपदेश

॥ शब्द १ ॥

अरे मन धीरज काहे न धरै ।
सुभ और असुभ करम पूरबले, रती घटै न बढ़ै ॥ १ ॥
होनहार होवै पुनि सोई, चिन्ता काहे करै ।
पसु पंछी जिव कीट पतंगा, सब की सुद्ध करै ॥ २ ॥
गर्भ बास में खबर लेतु है, बाहर क्यों बिसरै ।
मात पिता सुत सम्पति दारा, मोह के ज्वाल जरै ॥ ३ ॥
मन तू हंसन से साहिब के, भटकत काहे फिरै ।
सतगुरु छोड़ और को ध्यावै, कारज इक न सरै ॥ ४ ॥
साधुन सेवा कर मन मेरे, कोटिन ब्याधि हरै ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सहज में जीव तरै ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

मन तू मानत क्यों न मना रे ।
कौन कहन को कौन सुनन को, दूजा कौन जना रे ॥ १ ॥
दर्पन में प्रतिबिंब जो भासै, आप चहूँ दिसि सोई ।
दुबिधा मिटै एक जब होवै, तौ लखि पावै कोई ॥ २ ॥
जैसे जल तें हेम[1] बनतु है, हेम घूम जल होई ।
तैसे या तत[2] वाहू तत[3] सो, फिर यह अरु वह सोई ॥ ३ ॥

---

(१) बरफ । (२) जीव । (३) सार वस्तु ।

जो समुझै तो खरी कहन है, ना समुझै तो खोटी ।
कहै कबीर दोऊ पख त्यागै, ता की मति है मोटी[१] ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

मन तू थकत थकत थक जाई ।
बिन थाके तेरो काज न सरिहै, फिर पाछे पछिताई ॥ १ ॥
जब लग तोकर[२] जीव रहतु है, तब लग परदा भाई ।
टूटि जाय ओट तिनुका की, रसक रहै ठहराई ॥ २ ॥
सकल तेज तज होय नपुन्सक, यह मति सुन ले मेरी ।
जीवत मिर्तक दसा बिचारै, पावै बस्तु घनेरी ॥ ३ ॥
या के परे और कछु नाहीं, यह मति सब से पूरा ।
कहै कबीर मार मन चंचल, हो रहु जैसे घूरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

प्रीति उसी से कीजिये, जो ओर निभावै ।
बिना प्रीति के मानवा, कहिँ ठौर न पावै ॥ १ ॥
नाम सनेही जब मिलै, तब ही सच पावै ।
अजर अमर घर ले चलै, भवजल नहिँ आवै ॥ २ ॥
ज्योँ पानी दरियाव का, दूजा न कहावै ।
हिलि मिलि ऐको ह्वै रहै, सतगुरु समुझावै ॥ ३ ॥
दास कबीर बिचारि के, कहि कहि जतलावै ।
आपा मिटि साहिब मिलै, तब वह घर पावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

भजि ले सिरजनहार, सुघर तन पाइ के ॥ टेक ॥
काहे रहो अचेत, कहाँ यह औसर पैहो ।
फिर नहिँ ऐसी देह, बहुरि पाछे पछितैहो ॥

(१) दृढ़ (२) होंमैं-असित

लख चौरासी जोनि में, मानुष जन्म अनूप ।
ताहि पाइ नर चेतत नाहीं, कहा रंक कहा भूप ॥ १
गर्भ बास में रह्यो कह्यो, मैं भजिहौं तोहीं ।
निसि दिन सुमिरौं नाम, कष्ट से काढ़ो मोहीं ॥
चरनन ध्यान लगाइ के, रहौं नाम लौ लाय ।
तनिक न तोहिं बिसारिहौं, यह तन रहै कि जाय ॥ २
इतना कियो करार, काढ़ि गुरु बाहर कीन्हा ।
भूलि गयो वह बात, भयो माया आधीना ॥
भूलीं बातें उद्र की, आनि पड़ी सुधि एत ।
बारह बरस बीत गे या बिधि, खेलत फिरत अचेत ॥ ३ ॥
बिषया बान समान, देह जोबन मदमाते ।
चलत निहारत छाँह, तमक के बोलत बाते ॥
चोवा चंदन लाइ के, पहिरे बसन रँगाय ।
गलियाँ गलियाँ झाँकी मारै, पर तिरिया लख मुसकाय ॥ ४ ॥
तुरनापन गइ बीत, बुढ़ापा आन तुलाने ।
काँपन लागे सीस, चलत दोउ चरन पिराने ॥
नैन नासिका चूवन लागे, मुख तें आवत बास ।
कफ पित कंठै घेर लियो है, छुटि गइ घर की आस ॥ ५ ॥
मातु पिता सुत नारि, कहो का के संग जाई ।
तन धन घर औ काम धाम, सबही छुटि जाई ॥
आखिर काल घसीटिहै, परिहो जम के फन्द ।
बिन सतगुरु नहिं बाचि हो, समुझि देख मतिमन्द ॥ ६ ॥
सुफल होत यह देह, नेह सतगुरु से कीजै ।
मुक्ती मारग जानि, चरन सतगुरु चित दीजै ॥

नाम गहौ निरभय रहौ, तनिक न व्यापे पीर।
यह लीला है मुक्ति की, गावत दास कबीर ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६ ॥

बातौं मुक्ति न होइहै, छाड़ै चतुराई हो।
एक नाम जाने बिना, भूला दुनियाई हो ॥ १ ॥
बेद कतेब भवजाल है, मरि है बौराई हो।
मुक्ति भेव कछु और है, कोइ बिरले पाई हो ॥ २ ॥
काग छाड़ि बिन हंस ह्वै, नहिँ मिलत मिलाई हो।
जो पै कागा हंस ह्वै, वा से मिलि जाई हो ।॥ ३ ॥
बसहु हमारे देसवा, जम तलब नसाई हो।
गुरु बिन रहनि न होइहै, जम धै धै खाई हो ॥ ४ ॥
कहै कबीर पुकारि के, साधुन समुझाई हो।
सत्त सजीवन नाम है, सतगुरु हि लखाई हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

नाम लगन छूटै नहीँ, सोइ साधु सयाना हो ॥ टेक ॥
माटी कै बरतन बन्यो, पानी लै साना हो।
बिनसत बार न लागि है, राजा क्या राना हो ॥ १ ॥
क्या सराय का बासना, सब लोग बिगाना हो।
होत भोर सब उठि चले, दूर देस को जाना हो ॥ २ ॥
आठ पहर सन्मुख लड़ै, सो बाँधै बाना[1] हो।
जीत चला भवसागर सोइ, सूरा मरदाना हो ॥ ३ ॥
सतगुरु की सेवा करै, पावै परवाना[2] हो।
कहै कबीर धर्मदास से, तेहि काल डेराना हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

सुकिरत करि ले नाम सुमिरि ले, को जानै कल की।
जगत में खबर नहीं पल की ॥ १ ॥

---

(१) हथियार। (२) सनद।

झूठ कपट करि माया जोरिन, बात करैं छल की ।
पाप की पोट धरे सिर ऊपर, किस बिधि है हलकी ॥ २ ॥
यह मन तो है हस्ती मस्ती, काया मट्टी की ।
साँस साँस में नाम सुमिरि ले, अवधि घटै तन की ॥ ३ ॥
काया अंदर हंसा बोलै, खुसियाँ कर दिल की ।
जब यह हंसा निकरि जाहिंगे, मट्टी जंगल की ॥ ४ ॥
काम क्रोध मद लोभ निवारो, याही बात असल की ।
ज्ञान बैराग दया मन राखो, कहै कबीरा दिल की ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

ए जियरा तैं अमर लोक को, पर्‍यो काल बस आई हो ।
मनै सरूपी देव निरंजन, तोहि राख्यो भरमाई हो ॥ १ ॥
पाँच पचीस तीन को पिंजरा, ता में तोको राखै हो ।
तोको बिसरि गई सुधि घर की, महिमा आपन भावै हो ॥ २ ॥
निरंकार निरगुन है माया, तो को नाच नचावै हो ।
चमर दृष्टि की कुलफी दीन्हो, चौरासी भरमावै हो ॥ ३ ॥
चार बेद जा की है स्वासा, ब्रह्मा अस्तुति गावै हो ।
सो कथि ब्रह्मा जगत भुलाये, तेहि मारग सब धावै हो ॥ ४ ॥
जोग जाप नेम ब्रत पूजा, बहु परपंच पसारा हो ।
जैसे बधिक ओट टाटी के, दे बिस्वासै चारा हो ॥ ५ ॥
सतगुरु पीव जीव के रच्छक, ता से करो मिलाना हो ।
जा के मिले परम सुख उपजै, पावो पद निर्वाना हो ॥ ६ ॥
जुगन जुगन हम आय जनाई, कोइ कोइ हंस हमारा हो ।
कहै कबीर तहाँ पहुँचाऊँ, सत्त पुरुष दरबारा हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द १० ॥

मन रे अब की बेर सम्हारो ॥ टेक ॥
जन्म अनेक दगा में खोयो, बिन गुरु बाजी हारो ॥ १ ॥

बालापने ज्ञान नहिँ तन में, जब जनमो तब बारो ॥ २ ॥
तरुनाई सुख बास में खोयो, बाज्यो कूच नगारो ॥ ३ ॥
सुत दारा मतलब के साथी, ता को कहत हमारो ॥ ४ ॥
तीन लोक औ भवन चतुरदस, सबहि काल को चारो ॥ ५ ॥
पूर रह्यो जगदीस गुरु तन, वा से रह्यो नियारो ॥ ६ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब घट देखनहारो ॥ ७ ॥

॥ शब्द ११ ॥

मन करि ले साहिब से प्रीत ।
सरन आये सो सब ही उबरे, ऐसी उनकी रीत ॥ १ ॥
सुन्दर देह देखि मत भूलो, जैसे तृन पर सीत[1] ।
काँची देह गिरै आखिर को, ज्योँ बारू की भीत ॥ २ ॥
ऐसो जन्म बहुर नहिँ पैहौ, जात उमिरि सब बीत ।
दास कबीर चढ़े गढ़ ऊपर, देव नगारा जीत ॥ ३ ॥

॥ शब्द १२ ॥

साधो सार सबद गुन गाओ ॥ टेक ॥
काया कोट में काम बिराजे, सो जम के गढ़ छायो ।
चौदह बुरुज[2] दसो दरवाजा[3], कोठरी[4] अनेक बसायो ॥ १ ॥
पाँचो यार पचीसो भाई, सगरि गुहार बुलाओ ।
तेगा तरकसि कसि के बाँधो, दुरमति दूर बहाओ ॥ २ ॥
काढ़ि कटारी जम को मारो, तबै अमल गढ़ पाओ ।
त्रिकुटी मध तिरबेनी धारा, सूरमा भक्त कहाओ ॥ ३ ॥
मन बन्दूक औ ज्ञान पलीता, प्रेम पियाला लाओ ।
सबद कै गोली धुनि कै रंजक, काल मारि बिचलाओ ॥ ४ ॥

---

(१) पाला । (२) दस इन्द्री और चार अंतःकरण । (३) दस अंतरी द्वार । (४) अंतरी चक्र ।

जो कोइ बीर चढ़ै लड़ने पर, मन के मैल धुवाओ।
द्वादस घाटी छेके बाटी, सुरत सँगीन चढ़ाओ ॥ ५ ॥
गगन में गहगह होत महा धुन, साधक सुनि उठि धाओ।
संतन धीरा महा कबीरा, सूतल[1] ब्रह्म जगाओ ॥ ६ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सुख सागर में आइ के, मत जा रे प्यासा ॥ टेक ॥
अजहु समझ नर बावरे, जम करत तिरासा ॥ १ ॥
निर्मल नीर भरयो तेरे आगे, पी ले स्वासो स्वासा ॥ २ ॥
मृग-तृस्ना जल छाड़ बावरे, करो सुधा रस आसा ॥ ३ ॥
गोपीचंदा और भर्थरी, पिहिन प्रेम भर कासा[2] ॥ ४ ॥
ध्रू प्रहलाद भभीखन पीया, और पिया रैदासा ॥ ५ ॥
प्रेमहि संत सदा मतवाला, एक नाम की आसा ॥ ६ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, मिति गई भव की बासा ॥ ७ ॥

॥ शब्द १४ ॥

धुबिया[3] ज़ल बिच मरत पियासा ॥ टेक ॥
जल में ठाढ़ पियै नहिँ मूरख, अच्छा जल है खासा।
अपने घट कै मरम न जानै, करै धुबियन कै आसा ॥ १ ॥
छिन में धुबिया रोवै धोवै, छिन में होइ उदासा।
आपै बरै[4] करम की रसरी, आपन गर[5] कै फाँसा ॥ २ ॥
सच्चा साबुन लेहि न मूरख, है संतन के पासा।
दाग पुराना छूटत नाहीं, धोवत बारह मासा ॥ ३ ॥
एक रती को जोरि लगावै, छोरि दिये भरि मासा।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आछत अन्न उपासा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

सब बातन में चतुर है, सुमिरन में काँचा।
सचनाम को छाड़ि के, माया सँग राचा ॥ १ ॥

---

(१) जिसका हम को ज्ञान नहीं है। (२) प्याला। (३) मन। (४) बटे। (५) गला।

दीनबन्धु बिसराइया, माया दे बाचा।
ज्योंहि नचाया कामिनी, त्यों त्यों ही नाचा ॥ २ ॥
इन्द्रि बिषे के कारने, सही नर्क की आँचा।
कहै कबीर हरि जब मिले, हरिजन हो साचा ॥ ३ ॥

॥ शब्द १६ ॥

घर घर दीपक बरै, लखै नहिँ अंध है।
लखत लखत लखि परै, कटै जम फंद है ॥ १ ॥
कहन सुनन कछु नाहिँ, नहीं कछु करन है।
जीते ही मरि रहै, बहुरि नहिँ मरन है ॥ २ ॥
जोगी पड़े बिजोग, कहैं घर दूर है।
पासहि बसत हजूर, तु चढ़त खजूर है ॥ ३ ॥
बाम्हन दिच्छा देत, सो घर घर घालिहै।
मूर सजीवन पास, सो पाहन पालिहै ॥ ४ ॥
ऐसन दास कबीर, सलोना आप है।
नहीं जोग नहिँ जाप, पुन्न नहिँ पाप है ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

पढ़ो मन ओनामासीधंग[1] ॥ टेक ॥
ओंकार सबै कोइ सिरजे, सबद सरूपी अंग।
निरंकार निर्गुन अबिनासी, कर वाही को संग ॥ १ ॥
नाम निरंजन नैनन मद्धे, नाना रूप धरंत।
निरंकार निर्गुन अबिनासी, निरखै एकै रंग ॥ २ ॥
माया मोह मगन होइ नाचै, उपजै अंग तरंग।
माटी के तन थिर न रहतु है, मोह ममत के संग ॥ ३ ॥
सील संतोष हृदे बिच दाया, सबद सरूपी अंग।
साध के वचन सत्त करि मानो, सिर्जनहारो संग ॥ ४ ॥

---

(१) "ओं नमः सिद्ध" का अपभ्रंश।

ध्यान धीरज ज्ञान निर्मल, नाम तत्त्व गहंत।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आदि अंत परयंत॥ ५॥

॥ शब्द १८ ॥

मन तू जाव रे महलिया, आपन बिरना जगाव॥टेक॥
भौजिया मरै जगाइ न जागै, लग न सकै कछु दाव।
कायागढ़ तेरे निसि अँधियरिया, कौन करै वा को भाव॥ १॥
अकिल की आग दया की बाती, दीपक बारि लगाव।
तत कै तेल चुवै दियना में, ज्ञान मसाल दिखाव॥ २॥
भ्रम कै ताला लगा महल में, प्रेम की कुंजी लगाव।
कपट किवरिया खोल के रे, यहि विधि पिय को जगाव॥ ३॥
चित्त चुनरिया भक्ति घाघरा, चोली चाव सिलाव।
प्रेम कै पवन करौ प्रीतम पर, प्रीति पिछौरी उढ़ाव॥ ४॥
बार बार पैहौ नहिँ नर तन, फेरि भूलि मत जाव।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, फिरि न लगै अस दाव॥ ५॥

॥ शब्द १९ ॥

समुझ देख मन मीत पियरवा, आसिक होकर सोना क्या रे॥१॥
रूखा सूखा गम का टुकड़ा, चिकना और सलोना क्या रे॥२॥
पाया हो तो दे ले प्यारे, पाय पाय फिर खोना क्या रे॥३॥
जिन आँखन में नींद घनेरी, तकिया और बिछौना क्या रे॥४॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सीस दिया तब रोना क्या रे॥५॥

॥ शब्द २० ॥

जाके नाम न आवत हिये॥ टेक॥
काह भये नर कासी बसे से, का गंगा जल पिये॥ १॥
काह भये नर जटा बढ़ाये, का गुदरी के सिये॥ २॥
का रे भये कंठी के बाँधे, काह तिलक के दिये॥ ३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, नाहक ऐसे जिये॥ ४॥

॥ शब्द २१ ॥

नाम सुमिर नर बावरे, तोरी सदा न देहियाँ रे ॥टेक॥
यह माया कहो कौन की, केकरे सँग लागी रे ।
गुदरी[1] सी उठि जायगी, चित चेत अभागी रे ॥ १ ॥
सोने की लंका बनी, भइ धूर की धानी रे ।
सोइ रावन की साहिबी, छिन माहिँ बिलानी रे ॥ २ ॥
सोरह जोजन के मद्ध में, चले छत्र की छाँही रे ।
सोइ दुर्जोधन मिलि गये, माटी के माहीं रे ॥ ३ ॥
भवसागर में आइ के, कछु कियो न नेका रे ।
यह जियरा अनमोल है, कौड़ी को फेका रे ॥ ४ ॥
कहै कबीर पुकारि के, इहाँ कोइ न अपना रे ।
यह जियरा चलि जायगा, जस रैन का सपना रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २२ ॥

है कोइ भूला मन समुझावै ।
या मन चंचल चोर हेरि लो, छूटा हाथ न आवै ॥ १ ॥
जोरि जोहि धन गहिरे गाड़े, जहँ कोइ लेन न पावै ।
कंठ क पौल[2] आइ जम घेरे, दै दै सैन बतावै ॥ २ ॥
खोटा दाम गाँठि लै बाँधै, बड़ि बड़ि बस्तु भुलावै ।
बोय बबूल दाख[3] फल चाहै, सो फल कैसे पावै ॥ ३ ॥
गुरु की सेवा साध की संगत, भाव भगति बनि आवै ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बहुरि न भवजल आवै ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

जीवत मुक्त सोइ मुक्ता हो ।
जब लग जीवन मुक्ता नाहीं, तब लग दुख सुख भुगता हो ॥टेक॥

---

(१) बाज़ार जो कसबों में थोड़ी देर को तीसरे पहर लगता है। (२) कंठ का द्वार—गला घुँटने से भाव है। (३) छुहारा।

देह संग ना होवै मुक्ता, मुए मुक्ति कहँ होई हो।
तीरथबासी होय न मुक्ता, मुक्ति न धरनी सोई हो ॥ १ ॥
जीवत भर्म की फाँस न काटी, मुए मुक्ति की आसा हो।
जल प्यासा जैसे नर कोई, सपने फिरै पियासा हो ॥ २ ॥
है अतीत बंधन तेँ छूटै, जहँ इच्छा तहँ जाई हो।
बिना अतीत सदा बंधन मेँ, कितहूँ जानि न पाई हो ॥ ३ ॥
आवागवन से गये छूटि के, सुमिरि नाम अबिनासी हो।
कहै कबीर सोई जन गुरु है, काटी भ्रम की फाँसी हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २४ ॥

छिमा गहो हो भाई, धरि सतगुरु चरनी ध्यान रे ॥ १ ॥
मिथ्या कपट तजो चतुराई, तजो जाति अभिमान रे ॥ २ ॥
दया दीनता समता धारो, हो जीवत मृतक समान रे ॥ ३ ॥
सुरत निरत मन पवन एक करि, सुनो सबद धुन तान रे ॥ ४ ॥
कहै कबीर पहुँचौ सतलोका, जहँ रहै पुरुष अमान रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

का जोगी मुद्रा करै, साहिब गति न्यारी ॥ टेक ॥
नेती धोती वह करै, बहु भाँति सँवारी।
बाजीगर का पेखना,[१] सब देखनहारी ॥ १ ॥
झाड़ी जंगल वे फिरैँ, अंधे बैपारी।
पूजा तर्पन जाप मेँ, भूले ब्रह्मचारी ॥ २ ॥
उलटा पवन चढ़ाइ के, जीवैँ अधिकारी।
तन तजि के अजगर भये, गये बाजी हारी ॥ ३ ॥
सुन्न महल कहा सोइये, जहँ निसि अँधियारी।
कहै कबीर वहँ सोइये, रवि ससि उँजियारी ॥ ४ ॥

---

(१) तमाशा।

॥ शब्द २६ ॥

खसम न चीन्है बावरी, का करत बड़ाई ॥ टेक ॥
बातन भगत न होहिंगे, छोड़ौ चतुराई ।
कागा हंस न होहिँगे, दुबिधा नहिं जाई ॥ १ ॥
गुरु बिन ज्ञान न पाइहौ, मरिहौ भटकाई ।
चेत करौ वा देस, नहीँ जम हाथ बिकाई ॥ २ ॥
दिल दरियाव की माछरी, गंगा बहि आई ।
कोटि जतन से धोवही, तहु बास न जाई ॥ ३ ॥
साखी सबद सँदेस पढ़ि, मत भूलो भाई ।
संता मता कछु और है, खोजा सो पाई ॥ ४ ॥
तीनि लोक दसहौँ दिसा, जम धै धै खाई ।
जाइ बसो सतलोक मेँ, जहँ काल न जाई ॥ ५ ॥
कहै कबीर धर्मदास से, हंसा समुझाई ।
आदि अंत की बारता, सतगुरु से पाई ॥ ६ ॥

॥ शब्द २७ ॥

गुरु से कर मेल गँवारा, का सोचत बारम्बारा ॥ १ ॥
जब पार उतरना चहिये, तब केवट से मिलि रहिये ॥ २ ॥
जब उतरि जाय भवपारा, तब छूटै यह संसारा ॥ ३ ॥
जब दरसन देखा चहिये, तब दर्पन माँजत रहिये ॥ ४ ॥
जब दर्पन लागत काई, तब दर्सन कहँ तेँ पाई ॥ ५ ॥
जब गढ़ पर बजी बधाई, तब देख तमासे जाई ॥ ६ ॥
जब गढ़ बिच होत सकेला[1], तब हंसा चलत अकेला ॥ ७ ॥
कह कबीर देख मन करनी, वा के अंतर बीच कतरनी ॥ ८ ॥
कतरनि कै गाँठि न छूटै, तब पकरि पकरि जम लूटै ॥ ९ ॥

---

(१) सिमटाव ।

॥ शब्द २८ ॥

चल हंसा सतलोक हमारे, छोड़ो यह संसारा हो ॥ टेक ॥
यहि संसार काल है राजा, करम को जाल पसारा हो ।
चौदह खंड बसै जाके मुख, सब को करत अहारा हो ॥ १ ॥
जारि बारि कोइला करि डारत, फिरि फिरि दे औतारा हो ।
ब्रह्मा बिस्नु सिव तन धरि आये, और को कौन बिचारा हो ॥ २ ॥
सुर नर मुनि सब छल छल मारिन, चौरासी में डारा हो ।
मद्ध अकास आप जहँ बैठे, जोति सबद उजियारा हो ॥ ३ ॥
सेत सरूप सबद जहँ फूले, हंसा करत बिहारा हो ।
कोटिन सूर चंद छिपि जैहैं, एक रोम उजियारा हो ॥ ४ ॥
वही पार इक नगर बसतु है, बरसत अमृत धारा हो ।
कहै कबीर सुनो धर्मदासा, लखो पुरुष दरबारा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द २९ ॥

सतसँग लागि रहो रे भाई, तेरी बिगरी बात बनिजाई ॥टेक॥
दौलत दुनियाँ माल खजाने, बधिया बैल चराई ।
जबही काल के डंडा बाजै, खोज खबरि नहिँ पाई ॥ १ ॥
ऐसी भगति करो घट भीतर, छोड़ कपट चतुराई ।
सेवा बँदगी अरु अधीनता, सहज मिलैँ गुरु आई ॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु बात बताई ।
यह दुनियाँ दिन चार दहाड़े, रहो अलख लौ लाई ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३० ॥

मन न रँगाये रँगाये जोगी कपड़ा ॥ टेक ॥
आसन मारि मन्दिर में बैठे ।
नाम छाड़ि पूजन लागे पथरा ॥ १ ॥
कनवाँ फड़ाय जोगी जटवा बढ़ौले ।
दाढ़ी बढ़ाय जोगी होइ गैलै बकरा ॥ २ ॥

दाया राखि धरम को पालै, जग से रहै उदासी ।
अपना सा जिव सब का जानै, ताहि मिलै अबिनासी ॥ ५ ॥
सहै कुसबद बाद को त्यागै, छाड़ै गर्ब गुमाना ।
सत्तनाम ताही को मिलिहै, कहै कबीर सुजाना ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

साधो भजन भेद है न्यारा ॥ टेक ॥
का माला मुद्रा के पहिरे, चंदन घसे लिलारा ।
मूँड़ मुड़ाये सिर जटा रखाये, अंग लगाये छारा ॥ १ ॥
का पानी पाहन के पूजे, कंदमूल फरहारा ।
कहा नेम तीरथ ब्रत कीन्हे, जो नहिँ तत्व बिचारा ॥ २ ॥
का गाये का पढ़ि दिखलाये, का भरमे संसारा ।
का संध्या तरपन के कीन्हे, का षट कर्म अचारा ॥ ३ ॥
जैसे बधिक ओट टाटी के, हाथ लिये बिख[१] चारा ।
ज्योँ बक ध्यान धरै घट भीतर, अपने अंग बिकारा ॥ ४ ॥
दै परचे स्वामी ह्वै बैठे, करैँ बिषय ब्योहारा ।
ज्ञान ध्यान को मरम न जानैँ, बाद करैँ निःकारा ॥ ५ ॥
फूँके कान कुमति अपने से, बोझि लियो सिर भारा ।
बिन सतगुरु गुरु केतिक बहिगे, लोभ लहर की धारा ॥ ६ ॥
गहिर गँभीर पार नहिँ पावै, खंड अखंड से न्यारा ।
दृष्टि अपार चलब को सहजे, कटै भरम के जारा[२] ॥ ७ ॥
निर्मल दृष्टि आतमा जा की, साहिब नाम अधारा ।
कहै कबीर तेही जन आवै, मैं तैं तजै बिकारा ॥ ८ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

साधो करता कर्म तेँ न्यारा ।
आवै न जावै मरै नहिँ जीवै, ता को करै बिचारा ॥ १ ॥

---

(१) विशिख का अपभ्रंश जिसका अर्थ "बान" है । (२) जाल ।

राम को पिता जो जसरथ कहिये, जसरथ कौने जाया।
जसरथ पिता राम को दादा, कहो कहाँ तें आया ॥ २ ॥
राधा रुकमिन किसन की रानी, किसन दोऊ को मीरा।
सोलह सहस गोपी उन भोगी, वह भयो काम को कीरा ॥ ३ ॥
बासुदेव पितु मात देवकी, नंद महर घरि आयो।
ता को करता कैसे कहिये, (जो) करमन हाथ बिकायो ॥ ४ ॥
जा के घरनि गगन है सहसे[1], ता को सकल पसारा।
अनहद नाद सबद धुनि जा के, सोई खसम हमारा ॥ ५ ॥
सतगुरु सबद हृदय दृढ़ राखो, करहु बिबेक बिचारा।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, है सतपुरुष अपारा ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

अनगढ़िया देवा, कौन करै तेरी सेवा ॥ टेक ॥
गढ़े देवा को सब कोइ पूजै, नित ही लावै सेवा।
पूरन ब्रह्म अखंडित स्वामी, ता को न जानै भेवा ॥ १ ॥
दस औतार निरंजन कहिये, सो अपनो ना होई।
यह तो अपनी करनी भोगैं, करता औरहि कोई ॥ २ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसुर कहिये, इन सिर लागी काई।
इनहिं भरोसे मत कोइ रहियो, इन हूँ मुक्ति न पाई ॥ ३ ॥
जोगी जती तपी सन्यासी, आप आप में लड़िया।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सबद लखै सोइ तरिया ॥ ४ ॥

---

(१) हज़ारों।

सतगुरु महिमा

॥ शब्द १ ॥

जग में गुरु समान नहिँ दाता ॥ टेक ॥
बस्तु अगोचर दइ सतगुरु ने, भली बताई बाटा ।
काम क्रोध कैद करि राखे, लोभ को लीन्ह्यो नाथा ॥ १ ॥
काल्ह करै सो हाल हि करि ले, फिर न मिलै यह साथा ।
चौरासी में जाइ पड़ोगे, भुगतो दिन और राता ॥ २ ॥
सबद पुकार पुकार कहत है, करि ले संतन साथा ।
सुमिर बंदगी कर साहिब की, काल नवावै माथा ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो हो धर्मन, मानो बचन हमारा ।
परदा खोलि मिलो सतगुरु से, आवो लोक दयारा[1] ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

साधो सो सतगुरु मोहिँ भावै ।
सत्त नाम का भरि भरि प्याला, आप पिवै मोहिँ प्यावै ॥ १ ॥
मेले जाय न महँत कहावै, पूजा भेंट न लावै ।
परदा दूरि करै आँखिन को, निज दरसन दिखलावै ॥ २ ॥
जा के दरसन साहिब दरसै, अनहद सबद सुनावै ।
माया के सुख दुख करि जानै, संग न सुपन चलावै ॥ ३ ॥
निसि दिन सतसंगत में राचै, सबद में सुरत समावै ।
कहै कबीर ता को भय नाहीं, निर्भय पद परसावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

बलिहारी जाउँ मैं सतगुरु के, मेरा दरस करत भ्रम भागा ॥ १ ॥
धर्मराय से तिनुका तोड़ा, जम दुसमन से दूर किया ॥ २ ॥
सबद पान परवाना दीया, काग करम तजि हंस किया ॥ ३ ॥

---

(१) दयाल वा निर्मल चेतन्य देश ।

गुरु की मिहर से अगम निगम लखि, बिन गुरु कोई न मुक्त भया ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आवागवन से राखि लिया ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

कबीर फकीरी अजब है, जो गुरु मिलै फकीर ।
संसय सोक निवारि के, निरमल करै सरीर ॥

॥ शब्द ४ ॥

संत जन करत साहिबी तन में ॥ टेक ॥
पाँच पचीस फौज यह मन की, खेलैं भीतर तन में ।
सतगुरु सबद से मुरचा काटो, बैठो जुगत के घर में ॥ १ ॥
बंकनाल का धावा करिके, चढ़ि गये सूर गगन में ।
अष्ट कँवल दल फूल रह्यो है, परखे तत्त नजर में ॥ २ ॥
पच्छिम दिसि की खिड़की खोलो, मन रहै प्रेम मगन में ।
काम क्रोध मद लोभ निवारो, लहरि लेहु या तन में ॥ ३ ॥
संख घंट सहनाई बाजै, सोभा सिंध महल में ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, अजर साहिब लख घट में ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

जब कोइ रतन पारखी पैहो, हीरा खोल भँजैहो ॥ टेक ॥
तन को तुला सुरत को पलरा, मन को सेर बनैहो ।
मासा पाँच पचीस रती को, तोला तीन चढ़ैहो ॥ १ ॥
अगम अगोचर वस्तु गुरू की, लै सराफ पै जैहो ।
जहँ देख्यो संतन की महिमा, तहवाँ खोलि भँजैहो ॥ २ ॥
पाँच चोर मिलि घुसे महल में, इन से वस्तु छिपैहो ।
जम राजा के कठिन दूत हैं, उन से आप बचैहो ॥ ३ ॥
दया धरम से पार उतरिहो, सहज परम पद पैहो ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, हीरा गाँठि लगैहो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

साचे सतगुरु की बलिहारी, जिन यह कुंजी कुफल उघारी ॥ १ ॥
नख सिख साहिब है भरपूर, सो साहिब क्यों कहिये दूर ॥ २ ॥
सतगुरु दया अमीरस भींजे, तन मन धन सब अर्पन कीजे ॥ ३ ॥
कहै कबीर संत सुखदाई, सुख सागर इस्थिर घर पाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

वारी जाउँ मैं सतगुरु के, मेरा किया भरम सब दूर ॥ टेक ॥
चंद चढ़ा कुल आलम देखै, मैं देखूँ भ्रम दूर ॥ १ ॥
हुआ प्रकास आस गइ दूजी, उगिया निरमल नूर ॥ २ ॥
माया मोह तिमिर सब नासा, पाया हाल हजूर ॥ ३ ॥
विषय बिकार लार[1] है जेता, जारि किया सब धूर ॥ ४ ॥
पिया पियाला सुधि बुधि बिसरी, हो गया चकनाचूर ॥ ५ ॥
हुआ अमर मरै नहिँ कबहूँ, पाया जीवन मूर ॥ ६ ॥
बंधन कटा छूटिया जम से, किया दरस मंजूर ॥ ७ ॥
ममता गई भई उर समता, दुख सुख डारा दूर ॥ ८ ॥
समझै बनै कहे नहिँ आवै, भयो आनँद भरपूर ॥ ९ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बजिया निरमल तूर ॥ १० ॥

॥ शब्द ८ ॥

सतगुरु चीन्हो रे भाई ।
सत्तनाम बिन सब नर बूड़े, नरक पड़ी चतुराई ॥ १ ॥
वेद पुरान भागवत गीता, इन को सबै दृढ़ावैं ।
जा को जनम सुफल रे प्रानी, सो पूरा गुरु पावै ॥ २ ॥
बहुत गुरू संसार कहावैं, मंत्र देत हैं काना ।
उपजैं बिनसैं या भौसागर, मरम न काहू जाना ॥ ३ ॥

---

(१) साथ—एक लिपि मे "रार" (झगडा) है ।

सतगुरु एक जगत में गुरु हैं, सो भव से कढ़िहारा ।
कहै कबीर जगत के गुरुवा, मरि मरि लैं औतारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

सतगुरु साह संत सौदागर, तहँ मैं चलि के जाऊँ जी ॥ टेक ॥
मन की मुहर धरौँ गुरु आगे, ज्ञान कै घोड़ा लाऊँ जी ।
सहज पलान चित के चाबुक, अलख लगाम लगाऊँ जी ॥ १ ॥
बिवेक बिचार भरे तिर[1] तरकस, सुरत कमान चढ़ाऊँ जी ।
धीर गँभीर खड़ग लिये दल मल, माया कै कोट ढहाऊँ जी ॥ २ ॥
रिपु कै दल में सहजहि रौंदौं, आनँद तबल बजाऊँ जी ।
कहै कबीर मेरे सिर पर साहिब, ता को सीस नवाऊँ जी ॥ ३ ॥

॥ शब्द १० ॥

सुन सतगुरु की बानी लो ।
ताहि चीन्ह हम भये बैरागी, परिहर कुल की कानी लो॥ १ ॥
तब हम बहुतक दिन लौं अटके, सुन सुन बात बिरानी लो ।
अब कुछ समझ पड़ी अंतरगत, आदि कथा परमानी लो ॥ २ ॥
मनमति गई प्रगट भइ सम गति, रमता से रुचि मानी लो ।
लालच लोभ मोह ममता की, मिट गइ ऐंचा तानी लो ॥ ३ ॥
चंचल तें मन निस्चल कीन्हा, सुरत निरत ठहरानी लो ।
कहै कबीर दया सतगुरु तें, लखी अटल रजधानी लो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

हमरे सत्तनाम धन खेती ॥ टेक ॥
मन कै बैल सुरत हरवाहा, जब चाहै तब जोती ॥ १ ॥
सत्तनाम का बीज बोवाया, उपजे हीरा मोती ॥ २ ॥
उन खेतन में नफा बहुत है, संतन लूटा सेंती ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, उलटि पलटि नर जोती ॥ ४ ॥

---

(१) तीर ।

॥ शब्द १२ ॥

सतगुरु सोई दया करि दीन्हा, तातें अनचिन्हार मैं चीन्हा ॥
बिन पग चलना बिन पर उड़ना, बिना चुंच का चुगना ।
बिना नैन का देखन पेखन, बिन सरवन का सुनना ॥ १ ॥
चंद न सूर दिवस नहिं रजनी, तहाँ सुरत लौ लाई ।
बिना अन्न अमृत रस भोजन, बिन जल तृषा बुझाई ॥ २ ॥
जहाँ हरष तहँ पूरन सुख है, यह सुख का से कहना ।
कहै कबीर बल बल सतगुरु की, धन्य सिष्य का लहना[1] ॥ ३ ॥

॥ शब्द १३ ॥

मेरे सतगुरु पकड़ी बाँह, नहीं तो मैं बहि जाता ॥ टेक ॥
करम काटि कोइला किया, ब्रह्म अगिनि परिचार ।
लोभ मोह भ्रम जारिया, सतगुरु बड़े दयार ॥ १ ॥
कागा से हंसा किया, जाति बरन कुल खोय ।
दया दृष्टि से सहज सब, पातक डारे धोय ॥ २ ॥
अज्ञानी भटकत फिरै, जाति बरन अभिमान ।
सतगुरु सबद सुनाइया, भनक पड़ी मेरे कान ॥ ३ ॥
माया ममता तजि दई, बिषया नाहिं समाय ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, हद तजि बेहद जाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सब जग रोगिया हो, जिन सतगुरु बैद न खोजा ॥ १ ॥
सीखा सीखी गुरमुख हूआ, किया न तत्त बिचारा ॥ २ ॥
गुरु चेला दोउन के सिर पै, जम मारै पैजारा ॥ ३ ॥

---

[1] भाग ।

झूठे गुरु को सब कोइ पूजै, साचे ना पतियाई ॥ ४ ॥
अंधे बाँह गही अंधे की, मारग कौन दिखाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

गुरु रँग लागा सत रँग लागा, मेरे मन का संसय भागा ॥टेक॥
जब हम रहली हठिल[१] दिवानी, तब पिय मुखहु न बोले ।
जग दासी भइ खाक बराबर, साहिब अंतर खोले ॥ १ ॥
साचे मन तें साहिब नेरे, झूठे मन तें भागा ।
भक्त जनन अस साहिब मिलनो,[जस] कंचन संग सुहागा ॥ २ ॥
लोक लाज कुल की मर्जादा, तोरि दियो जस धागा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, भाग हमारा जागा ॥ ३ ॥

॥ शब्द १६ ॥

जाकै रहनि अपार जगत में, सो गुरु नाम पियारा हो ॥टेक॥
जैसे पुरइनि[२] रहि जल भीतर, जलहि में करत पसारा हो ।
वा के पानी पत्र न लागै, ढरकि चलै जस पारा हो ॥ १ ॥
जैसे सती चढ़ै सत ऊपर, स्वामी बचन न टारा हो ।
आप तरै औरन को तारै, तारै कुल परिवारा हो ॥ २ ॥
जैसे सूर चढ़ै रन ऊपर, पाछे पग नहिँ डारा हो ।
वा की सुरत रहै लड़ने में, प्रेम मगन ललकारा हो ॥ ३ ॥
भवसागर इक नदी अगम है, लख चौरासी धारा हो ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, बिरले उतरे पारा हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द १७ ॥

धन सतगुरु जिन दियो उपदेस, भव बूड़त गहि राखे केस ॥१॥
साकित से गुरु अपना किया, सत्त नाम सुमिरन को दिया ॥२॥
जाति बरन कुल करम नसाया, साध मिले जब साध कहाया ॥३॥

[illegible] (२) कोईं ।

पारस परसे कंचन होइ, लोहा वाहि कहै नहिँ कोई ॥ ४ ॥
पारस कौ गुन देखौ आय, लोहा महँगे मोल बिकाय ॥ ५ ॥
स्वाँति बूँद कदली में परै, रूप बरन कछु औरहि धरै ॥ ६ ॥
नाम कपूर बासना[१] होई, कदली वा को कहै न कोई ॥ ७ ॥
निसि दिन सुमिरौ एकै नाम, जा सुमिरे तेरो झट है काम ॥ ८ ॥
कहै कबीर यह साचो खेल, फूल तेल मिलि भयो फुलेल ॥ ९ ॥

॥ शब्द १८ ॥

सतगुरु सबद सहाई ॥ टेक ॥
निकटि गये तन रोग न ब्यापै, पाप ताप मिटि जाई ।
अठवन पठवन दीठि न लागै, उलटे तेहि घरि खाई ॥ १ ॥
मारन मोहन उचाटन बसिकरन, मनहिं माहिं पछिताई ।
जादू जंतर जुक्ति भुक्ति नहिं, लागे सबद के बान ठहाई ॥ २ ॥
ओझा डाइनि डर से डरपैं, जहर जूड़[२] हो जाई ।
बिषधर[३] मन में करि पछितावा, बहुरि निकट नहिं आई ॥ ३ ॥
जहँ तक देवी काली के गुन, संत चरन लौ लाइ ।
कह कबीर काटो जम फंदा, सुकृती लाख दुहाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १९ ॥

पिया मोरा मिलिया सत्त गियानी ॥ टेक ॥
सब में व्यापक सब से न्यारा, ऐसा अंतरजामी ।
सहज सिंगार प्रेम का चोला, सुरत निरत भरि आनी ॥ १ ॥

---

(१) सुगंधि । (२) ठंढा । (३) साँप ।

सील संतोष पहिरि दोउ सत गुन, हो रहि मगन दिवानी ।
कुमति जराइ करौं मैं कोइला, पढ़ी प्रेम रस बानी ॥ २ ॥
ऐसा पिय हम कबहु न देखा, सूरत देखि लुभानी ।
कहै कबीर मिला गुरु पूरा, तन की तपन बुझानी ॥ ३ ॥

॥ शब्द २० ॥

अवधू कुदरत की गति न्यारी ।
रंक निवाज करै वह राजा, भूपति करै भिखारी ॥ १ ॥
जा से लौंग गाछ फर लागै, चंदन फूलन फूला ।
मच्छ सिकारी रमै जँगल में, सिंह समुंदर झूला ॥ २ ॥
रेंड रूख भयौ मलयागिरि, चहुँ दिसि फूटै बासा ।
तीनि लोक ब्रह्मंड खंड में, अँधरा देखि तमासा ॥ ३ ॥
पँगुला मेरु सुमेरु उड़ावै, त्रिभुवन माही डोलै ।
गूँगा ज्ञान बिज्ञान प्रकासै, अनहद बानी बोलै ॥ ४ ॥
पतालै बाँध अकासै पठवै, सेस स्वर्ग पर राजै ।
कह कबीर समरथ है स्वामी, जो कछु करै सो छाजै ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

है सब में सब ही तैं न्यारा ॥ टेक ॥
जीव जंतु जल थल सब ही में, सबद बियापत बोलनहारा ॥१॥
सब के निकट दूर सब ही तें, जिन जैसा मन कीन्ह बिचारा ॥२॥
।र सबद कौ जो जन पावै, सो नहिं करत नेम आचारा ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सबद गहै सो हंस हमारा ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

होइहै कस नाम बिना निस्तारा ॥ टेक ॥
देवी देवा भूतल पूजा, आनम नाम त्रिसारा ।
वेस्या कै पुत्र पितु कौन से कहिहै, ऐसो ही संसारा ॥ १ ॥

पिय तेरे चतुर तु मूरख नारी, कबहुँ न पिया की सेज सँवारी ॥३॥
तैं बौरी बौरापन कीन्ह्यो, भर जोबन पिय अपन न चीन्ह्यो ॥४॥
जागु देखु पिय सेज न तेरे, तोहि छाड़ि उठि गये सबेरे ॥५॥
कहै कबीर सोई धन जागै, सबद बान उर अंतर लागै ॥६॥

॥ शब्द ३ ॥

जतन बिन मिरगन खेत उजाड़े ॥ टेक ॥
पाँच मिरग पच्चीस मिरगनी, तिन में तीन चितारे[1]।
अपने अपने रस के भोगी, चुगते न्यारे न्यारे ॥ १ ॥
पाँच डार सूटन[2] को आई, उतरे खेत मँझारे।
हा हा करत बाल ले भागे, टेरि रहे रखवारे ॥ २ ॥
सुनियो रे हम कहत सबन को, ऊँचे हाँक हँकारे।
यह नर देह बहुरि नहिँ पैहौ, काहे न रहत सँभारे ॥ ३ ॥
तन कर खेती मन कर बाड़ी, मूल सुरत रखवारे।
ज्ञान बान और ध्यान धनुष करि, क्यों नहिं लेत सँघारे[3] ॥ ४ ॥
सार सबद बन्दूख सुरत धरि, मारे तीन चितारे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, उबरे[4] खेत तिहारे ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सृष्टि गई जहँड़ाय[5], दृष्टि करि देखि ले ॥ टेक ॥
चीन्हो करो बिचार, दयानिधि कहाँ बिराजैं।
कहाँ पुरुष के देस, कहाँ बैठे बिलगाजैं ॥
जब लगि नैन न देखिये, तब लगि हिय न जुड़ाय।
जल बिन मीन कंथ बिन बिरहिनि, तलफि तलफि जिय जाय ॥ १ ॥

(१) चितकबरे, चीतल। (२) तोता। (३) मार लेना। (४) बच गये।
(५) ठगाय।

बाढ़े बिरह बिरोग, रोग काहू ना चीन्हा।
घर घर बाढ़े बैद, रोग अधिका रचि दीन्हा॥
बिरह बिरोग कैसे मिटै, कैसे तपन बुझाय।
बैद मिलै जब औषदी, जिय कै भरम नसाय॥ २॥
औरौ कहूँ बताय सुनो, परपंच कै फंदा।
पूजैं भूत पिसाच, काल घर करैं अनंदा॥
एकादसी निर्जल रहैं, भगता सुनैं पुरान।
बकरा मारि माँस कै भोजन, ऐसे चतुर सुजान॥ ३॥
अरे निपट चंडाल, महा पापी अपराधी।
बिना दया अज्ञान, काया काहे नहिं साधी॥
तोहिं अस निगुरा बहुत फिरत हैं, मन में करैं गुमान।
कहै कबीर जो सबद से बिछुड़े, ता को नरक निदान॥ ४॥

॥ शब्द ५॥

चार दिन अपनी नौबत चले बजाइ॥ टेक॥
उताने खटिया गड़िले मटिया, संग न कछु ले जाइ॥ १॥
देहरी बैठी मेहरी रोवै, द्वारे लौं सँग माइ॥ २॥
मरघट लौं सब लोग कुटुँब मिलि, हंस अकेला जाइ॥ ३॥
वहि सुत वहि बित वहि पुर पाटन, बहुरि न देखै आइ॥ ४॥
कहत कबीर भजन बिन बंदे, जनम अकारथ जाइ॥ ५॥

॥ शब्द ६॥

कहा नर गरबस[1] थोरी बात।
मन दस नाज टका चार गाँठी, ऐंड़ो टेढ़ो जात॥ १॥

---

(१) शेखी करता है।

॥ शब्द १० ॥

हिरवा भुलाय ससुरे जालू बारी धनियाँ ॥ टेक ॥
कौने तन तोरा कौने मन है, कौने बेद तुम जनियाँ ।
कौन पुरुष के ध्यान धरतु हौ, कौने नाम निसनियाँ ॥ १ ॥
काया तन ओंकार मन है, सूच्छम बेद हम जनियाँ ।
सत्तपुरुष कै ध्यान धरतु हैं, और सतनाम निसनियाँ ॥ २ ॥
ई मत जानो हिरवा जिरवा, बनिया हाट बिकनियाँ ।
ई हिरवा अनमोल रतन है, अनहुन देस तें अनियाँ ॥ ३ ॥
आयो चोर सबन के मुसलस, राजा रैयत रनियाँ ।
लाखन में कोइ बिरले बचिगे, जिनके अलख लखनियाँ ॥ ४ ॥
काया नगर इक अजब बृच्छ है, साखा पत्र तेहि झरियाँ ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, पावै बिरले टिकनियाँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

दुनिया झामर झूमर अरुझी ॥ टेक ॥
अपने सुत कै मुँड़न करावै, छूरा लगन न पावै ।
अजया[1] कै चिंगना धरि मारै, तनिकौ दया न आवै ॥ १ ॥
लैके तेगा चला बाँकुरा,[2] अजया कै सिर काटा ।
पूजा रही सो मालिन लै गइ, कूकुर मूरत चाटा ॥ २ ॥
माटी कै चौतरा बनाइन, कुत्ता मुत मुत जाई ।
जो देउता में सक्ती होती, कुत्ता धरि धरि खाई ॥ ३ ॥
गोवर लैके गौर बनाइन, पूजैं लोग लुगाई ।
यह बोलै वह बोल न जानै, पानी में डुबकाई ॥ ४ ॥
सोने की इक मुरति बनाइन, पूजन को सब धाई ।
विपति पड़े गहने[3] धरि खाई, भल कीन्ह्यो सेवकाई ॥ ५ ॥

(१) बधिया किया हुआ बकरा । (२) बहादुर । (३) गिरवीं ।

देवी जी को खस्सी भेड़ा, पीरन को नौ नेजा।
उन साहिब को कुछ भी नाहीं, बाँह पकरि जिन भेजा ॥ ६ ॥
निरगुन आगे सरगुन नाचै, बाजै सोहँग तूरा।
चेला के पाँव गुरू जी लागैं, यही अचम्भा पूरा ॥ ७ ॥
जाति बरन दूनोँ हम देखा, झूठी तन की आसा।
तीनों लोक नरक में बूड़े, बाम्हन के बिस्वासा ॥ ८ ॥
रही एक की भइ अनेक की, बेस्या सहस भतारी।
कहै कबीर केहि के सँग जरिहौ, बहुत पुरुष की नारी ॥ ९ ॥

॥ शब्द १२ ॥

साधो ई मुर्दन के गाँव ॥ टेक ॥

पीर मरे पैगम्बर मरिगे, मरिगे जिन्दा जोगी।
राजा मरिगे परजा मरिगे, मरिगे बैद्य औ रोगी ॥ १ ॥
चाँदो मरिहै सुजो मरिहैं, मरिहैं धरनि अकासा।
चौदह भुवन चौधरी मरिहैं, इनहूँ कै का आसा ॥ २ ॥
नौ हू मरिगे दस हू मरिगे, मरिगे सहस अठासी।
तेंतिस कोट देवता मरिगे, परिगे काल की फाँसी ॥ ३ ॥
नाम अनाम रहै जो सदही, दूजा तत्त न होई।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, भटकि मरै मत कोई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १३ ॥

अब कहँ चले अकेले मीता, उठि क्यों करहु न घर की चेता ॥१॥
खीर खाड़ घृत पिंड सँवारा, सो तन लै बाहर करि डारा ॥२॥
जेहि सिर रचिरचि बाँधिसु पागा, सो सिर रतन बिडारैं कागा ॥३॥
हाड़ जरै जस सूखी लकरी, केस जरै जस तृन की कूरी ॥४॥
आवत संग न जात सँघाती,[1] कहा भये दल बाँधे हाथी ॥५॥

(१) साथी, संगी।

माया के रस लेन न पाया, अंतर जम बिलार होइ धाया ॥६॥
कहै कबीर नर अजहुँ न जागा, जम कौ मुँगरा बरसन लागा ॥७॥

॥ शब्द १४ ॥

काया बौरी चलत प्रान काहे रोई ॥ टेक ॥
काया पाय बहुत सुख कीन्हो, नित उठि मलि मलि धोई ।
सो तन छिया छार होइ जैहै, नाम न लैहै कोई ॥ १ ॥
कहत प्रान सुन काया बौरी, मोर तोर संग न होई ।
तोहि अस मित्र बहुत हम त्यागा, संग न लीन्हा कोई ॥ २ ॥
ऊसर खेत के कुसा मँगाये, चाँचर चवर[1] के पानी ।
जीवत ब्रम्ह को कोई न पूजै, मुरदा कै मेहमानी ॥ ३ ॥
सिव सनकादि आदि ब्रम्हादिक, सेस सहस मुख होई ।
जो जो जनम लियो बसुधा[2] में, थिर न रहो है कोई ॥ ४ ॥
पाप पुन्य हैं जनम सँघाती, समुझ देखु नर लोई ।
कहत कबीर अभिअंतर की गति, जानत बिरले कोई ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं ॥ टेक ॥
ता दिन तेरे तन तरवर के, सबै पात झरि जैहैं ॥ १ ॥
या देही को गर्ब न कीजे, स्यार काग गिध खैहैं ॥ २ ॥
तन गति तीन बिष्ट किर्म ह्वै, नातर खाक उड़ैहैं[3] ॥ ३ ॥
कहँ वह नैन कहाँ वह सोभा, कहँ वह रूप दिखैहैं ॥ ४ ॥

---

(१) परती जमीन की छिछली तलैया। (२) पृथ्वी।

(३) मरने पर शरीर की तीन गति होती है—(१) लुटंत अर्थात जानवरों का आहार होकर विष्टा हो जाना, (२) गडंत अर्थात कबर में गड़ कर कीड़े पड़ जाना, (३) फुकत अर्थात जलकर राख हो जाना।

जिन लोगन तें नेह करतु है, तेई देखि घिनैहैं ॥ ५ ॥
घर के कहत सवेरे काढ़ो, भूत होय धरि खैहैं ॥ ६ ॥
जिन पूतन को बहु प्रतिपाल्यो, देवी देव मनैहैं ॥ ७ ॥
तेह लै बाँस दियो खोपरी में, सीस फोरि बिखरैहैं ॥ ८ ॥
अजहूँ मूढ़ करै सतसंगत, संतन में कछु पैहै ॥ ९ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, आवागवन नसैहै ॥ १० ॥[1]

॥ शब्द १६ ॥

आपन काहे न सँवारै काजा ॥ टेक ॥
ना गुरु भगति साध की संगत, करत अधम निर्लाजा ।
मानुष जनम फेर नहिं पैहो, सब जीवन में राजा ॥ १ ॥
पर नारी प्यारी करि जानै, सो नर नरक समाजा ।
जिनके पंथ भूलि गे भोंदू, करु चलने के साजा ॥ २ ॥
इहाँ नहीं कोइ मीत तुम्हारा, मात पिता सुत आजा ।
ये हैं सब मतलब के साथी, काहे करत अकाजा ॥ ३ ॥
वृद्ध भये पर नाम भजतु हैं, निकसत सुरत अवाजा ।
टूटी खाट पुराना झिलँगा, पड़े रहो दरवाजा ॥ ४ ॥
ब्रम्हा बिस्नु महेस डिराने, सुनत काल के गाजा ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, चढ़िले नाम जहाजा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

जनम तेरो धोखे में बीता जाय ॥ टेक ॥
माटी के गोंद हंस बनिजारा, उड़ि गे पंछी बोलनहारा ॥ १ ॥
चार पहर धंधा में बीता, रैन गँवाय सुख सोवत खाट ॥ २ ॥
जस अंजुल जल छीजत देखा, तैसे झरिगे तरवर पात ॥ ३ ॥

---

(१) इस शब्द को कोई कोई सूरदास जी का बताते हैं पर हम ने इस को तीन लिपियों में जिन में से एक डेढ़सौ बरस से अधिक पुरानी है कबीर साहिब के नाम से पाया ।

॥ शब्द २७ ॥

दुलहिनी तोहि पिय के घर जाना ॥ टेक ॥
काहे रोवो काहे गावो, काहे करत बहाना ॥ १ ॥
काहे पहिरो हरि हरि चुरियाँ, पहिरो नाम कै बाना ॥ २ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बिन पिया नाहिं ठिकाना ॥ ३ ॥

॥ शब्द २८ ॥

तोर हीरा हिराइलबा किंचड़े में ॥ टेक ॥
कोई ढूँढ़ै पूरब कोई ढूँढ़ै पच्छिम, कोई ढूँढ़ै पानी पथरे में ॥१॥
सुर नर मुनि अरु पीर औलिया, सब भूलल बाड़ैं नखरे में ॥२॥
दास कबीर ये हीरा को परखैं, बाँधि लिहलैं जतन से अचरे में ॥३॥

॥ शब्द २९ ॥

काया सराय में जीव मुसाफिर, कहा करत उनमाद[1] रे ।
रैन बसेरा करि ले डेरा, चला सबेरे लाद रे ॥ १ ॥
तन कै चोला खरा अमोला, लगा दाग पर दाग रे ।
दो दिन की जिंदगानी में क्या, जरै जगत की आग रे ॥ २ ॥
क्रोध केंचुली उठी चित्त में, भये मनुष तें नाग रे ।
सूझत नाहिं समुँद सुख सागर, बिना प्रेम बैराग रे ॥ ३ ॥
सरवन सबद बूझि सतगुरु से, पूरन प्रगटे भाग रे ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, पाया अचल सुहाग रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३० ॥

का लै जैबो, ससुर घर ऐबो ॥ टेक ॥
गाँव के लोग जब पूछन लगिहैं, तब तुम का रे बतैबो ॥ १ ॥
खोल घुँघट जब देखन लगिहैं, तब बहुतै सरमैबो ॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, फिर सासुर नहिं पैबो ॥ ३ ॥

---

(१) मस्ती ।

॥ शब्द ३१ ॥

चल चल रे भँवरा[1] कवल पास । तेरी भँवरी बोलै अति उदास ॥१॥
चौज करत वहँ बार बार । तन बन फूल्यो डार डार ॥२॥
बनस्पती का लियो है भोग । सुख न भयो तन बढ़्यो रोग ॥३॥
दिवस चार के सुरँग फूल । तेहि लखि भँवरा रह्यो भूल ॥४॥
बनस्पती जब लागै आग । तब भँवरा कहाँ जैहो भाग ॥५॥
पुहुप पुराने गये सूख । तब भँवरा लगि अधिक भूख ॥६॥
उड़ि न सकत बल गयो छूट । तब भँवरा रोवै सीस कूट ॥७॥
चहूँ दिसि चितवै मुँइ पड़ाय । अब ले चल भँवरी सिर चढ़ाय ॥८॥
कहै कबीर ये मन के भाव । इक नाम बिना सब जम के दाव ॥९॥

॥ शब्द ३२ ॥

आयो दिन गौने कै हो, मन होत हुलास ॥ टेक ॥
पाँच भीट के पोखरा हो, जा में दस द्वार ।
पाँच सखी बैरिन भईं हो, कस उतरब पार ॥ १ ॥
छोट मोट डोलिया चँदन कै हो, लागे चार कहार ।
डोलिया उतारैं बीजा बनवाँ हो, जहँ कोइ न हमार ॥ २ ॥
पइयाँ तोरी लागौं कहरवा हो, डोली धरु छिन बार ।
मिलि लेवँ सखिया सहेलरि हो, मिलौं कुल परिवार ॥ ३ ॥
दास कबीर गावै निरगुन हो, साधो करि लो बिचार ।
नरम गरम सौदा करि लो हो, आगे हाट न बजार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

भजु मन जीवन नाम सवेरा ॥ टेक ॥
सुंदर देह देखि जिनि भूलो, झपट लेत जस बाज बटेरा ॥१॥
या देही को गरब न कीजै, उड़ि पंछी जस लेत बसेरा ॥२॥

---

(१) मन ।

या नगरी में रहन न पैहौ, कोइ रहि जाय न दुक्ख घनेरा ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, मानुष जनम न पैहौ फेरा ॥४॥

॥ शब्द ३४ ॥

मन तू पार उतरि कहँ जैहै।
आगे पंथी पंथ न कोई, कूच मुकाम न पैहै॥ १ ॥
नहिं तहँ नीर नाव नहिं खेवट, ना गुन[1] खैंचनहारा।
धरनी गगन कल्प कछु नाहीं, ना कछु वार न पारा ॥ २ ॥
नहिं तन नहिं मन नाहिं अपनपौ, सुन में सुद्धि न पैहौ।
बलवाना ह्वै पैठौ घट में, व्हाँ हीं ठौरें होइहौ ॥ ३ ॥
बारहि बार बिचारि देखु मन, अंत[2] कहूँ मत जैहौ।
कहै कबीर सब छाड़ि कल्पना, ज्यों के त्यों ठहरैहौ ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

कर साहिब से प्रीत रे मन, कर साहिब से प्रीत ॥ टेक ॥
ऐसा समय बहुरि नहिं पैहौ, जैहै औसर बीत।
तन सुंदर छबि देख न भूलो, यह बालू की भीत ॥ १ ॥
सुख संपति सुपने की बतियाँ, जैसे तृन पर सीत।
जाही कर्म परम पद पावै, सोई कर्म करु मीत ॥ २ ॥
सरन आये सो सबहि उबारैं, यहि साहिब की रीत।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, चलिहौ भवजल जीत ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

बंदे करिले आप निबेरा ॥ टेक ॥
आप चेत लखु आप ठौर करु, मुए कहाँ घर तेरा ॥ १ ॥
यहि औसर नहिं चेतो प्रानी, अंत कोई नहिं तेरा ॥ २ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, कठिन काल का घेरा ॥ ३ ॥

---

(१) डोरी जिसे मस्तूल में बाँध कर नाव खींचते हैं। (२) दूसरे ठौर।

॥ शब्द २७ ॥

भजन बिन योंही जनम गँवायो ॥ टेक ॥
गर्भ बास में कौल कियो थो, तब तोहि बाहर लायो ॥ १ ॥
जठर अगिन तें काढ़ि निकारो, गाँठि बाँधि क्या लायो ॥ २ ॥
बह बह मुवो बैल की नाईं, सोइ रह्यो उठ खायो ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, चौरासी भरमायो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २८ ॥

ऐसी नगरिया में केहि बिधि रहना,
नित उठि कलँक लगावै सहना[1] ॥ १ ॥
एकै कुवा पाँच पनिहारी।
एकै लेजुर[2] भरैं नौ नारी ॥ २ ॥
फटि गया कुवा बिनसि गइ बारी[3]।
बिलग भईं पाँचो पनिहारी ॥ ३ ॥
कहै कबीर नाम बिन बेड़ा।
उठि गया हाकिम लुटि गया डेरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द २९ ॥

चली है कुल-बोरनी गंगा नहाय ॥ टेक ॥
सतुवा कराइन बहुरी भुँजाइन,
घूँघट ओटे भसकत[4] जाय ॥ १ ॥
गठरी बाँधिन मोटरी बाँधिन,
खसम के मूड़े दिहिन धराय ॥ २ ॥
बिछुवा पहिरिन औंठा पहिरिन,
लात खसम के मारिन धाय ॥ ३ ॥
गंगा न्हाइन जमुना न्हाइन,
नौ मन मैलहि लिहिन चढ़ाय ॥ ४ ॥

(१) कोतवाल। (२) रस्सी। (३) बगीचा। (४) चाबती।

पाँच पचीस के धक्का खाइन,
घरहु की पूँजी आई गँवाय ॥ ५ ॥
कहै कबीर हेत करु गुरु से।
नहिँ तोर मुक्ती जाइ नसाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द ४० ॥

कलजुग में प्यारी मेहरिया ॥ टेक ॥
बात कहत मुँह फारि खातु है, मिली घमधुसरि धँगरिया ॥१॥
भीतर रहत तो घूँघट काढ़त, बाहर मारत नजरिया ॥२॥
सास ससुर को लातन मारत, खसम को मारत लतरिया[1] ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जमपुर जावै मेहरिया ॥४॥

॥ शब्द ४१ ॥

लोगवै बड़ मतलब के यार, अब मोहिँ जान पड़ी ॥ टेक ॥
जब लगि बैल रहे बनिया घर, तब लग चाह बड़ी।
पौरुष थके कोइ बात न पूछे, घूमत गली गली ॥ १ ॥
बाँधे सत्त सती इक निकसी, पिया के फंद परी।
साचा साहिब ना पहिचाना, मुरदे संग जरी ॥ २ ॥
हरा बृच्छ पंछी आ बैठा, रीति मनोरथ की।
जला बृच्छ पंछी उड़ि चाला, यही रीति जग की ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, मनसा बिषय भरी।
मनुवाँ तो कहिँ औरहि डोले, जपता हरी हरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४२ ॥

किसी दा भइया क्या ले जाना, ओहि गया ओहि गया भँवर निमाना ॥१॥
उड़ि गया तोता रहि गया पिंजरा, दसके जी जाना ठिकाना ॥२॥
ना कोइ भाई ना कोइ बंधू, जो लिखिया सो खाना ॥३॥

---

(१) जूता। (२) कह कर।

काहू को नवा काहू को पुराना, काहू को अधुराना ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जंगल जाइ समाना ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

भाई तैंने बड़ा ही जुलम गुजारा, जो सतगुरु नाम बिसारा ॥टेक॥
रखा ढका तोहि पूछन लागे, कुटुँब पूत परिवारा ॥ १ ॥
दर्द मर्द की कोई न जाने, झूठा जगत पसारा ॥ २ ॥
महल मड़ैया छिन में त्यागी, बाँधि काठ पर डारा ॥ ३ ॥
साहू थे सो हुए बदाऊ[1], लुटन लगे घर बारा ॥ ४ ॥
घर की तिरिया चरचन[2] लागी, क्यों नहिं नाम सम्हारा ॥ ५ ॥
काम क्रोध लोभ नहिं त्यागे, अब क्या करत बिचारा ॥ ६ ॥
सदा रंग महबूब गुमानी, यही सरूप तुम्हारा ॥ ७ ॥
कहै कबीर सुनो भाइ साधो, अब क्यों रोवे गँवारा ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४४ ॥

हंसा सुधि कर अपनो देसा ॥ टेक ॥
इहाँ आइ तोरी सुधि बुधि बिसरी, आनि फँसे परदेसा ।
अबहूँ चेतु हेतु करु पिउ से, सतगुरु के उपदेसा ॥ १ ॥
जौन देस से आये हंसा, कबहुँ न कीन्ह अँदेसा ।
आइ पर्यो तुम मोह फंद में, काल गह्यो तेरो केसा ॥ २ ॥
लाओ सुरत अस्थान अलख पर, जा को रटत महेसा ।
जुगन जुगन की संसय छूटै, छूटै काल कलेसा ॥ ३ ॥
का कहि आयौ काह करतु हौ, कहँ भूले परदेसा ।
कहै कबीर वहाँ चल हंसा, जनम न होय हमेसा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

का नर सोवत मोह निसा[3] में, जागत नाहिं कूच नियराना ॥टेक॥
पहिले नगारा सेत केस भे, दूजे बैन सुनत नहिं काना ॥ १ ॥
तीजे नैन दृष्टि नहिं सूझै, चौथे आइ गिरा परवाना ॥ २ ॥

---

(१) डाकू। (२) ताना मारना। (३) रात।

मातु पिता कहना नहिं माने, बिप्रन से कीन्हा अभिमाना ॥३॥
धरम की नाव चढ़न नहिं जानै, अब जमराज ने भेद बखाना ॥४॥
होत पुकार नगर कसबे में, रैयत लोग सभै अनुलाना ॥५॥
पूरन ब्रम्ह की होत तयारी, अंत भवन बिच प्रान लुकाना ॥६॥
प्रेम नगरिया में हाट लगतु है, जहँ रँगरेजवा है सतवाना[1] ॥७॥
कहै कबीर कोइ काम न ऐहै, माटी कै देहिया माटी मिलि जाना ॥८॥

॥ शब्द ४६ ॥

अरे दिल गाफिल, गफलत मत कर,
इक दिन जम तेरे आवैगा ॥ टेक ॥

सौदा करन को या जग आया, पूँजी लाया भूल गँवाया ।
प्रेम नगर का अंत न पाया, ज्यों आया त्यों जावैगा ॥१॥
सुन मेरे साजन सुन मेरे मीता, या जीवन में क्या क्या कीता ।
सिर पाहन का बोझा लीता, आगे कौन छुड़ावैगा ॥२॥
परली पार मेरा मीता खड़िया, उस मिलने का ध्यान न धरिया ।
टूटी नाव ऊपर जा बैठा, गाफिल गोता खावैगा ॥३॥
दास कबीर कहै समुझाई, अंत काल तेरो कौन सहाई ।
चला अकेला संग न काई[2], किया आपना पावैगा ॥४॥

भेद

॥ शब्द १ ॥

[प्रश्न गोरखनाथ]

कबिरा कब से भये बैरागी, तुम्हरी सुरत कहाँ को लागी ॥

[उत्तर]

धुँधमई[1] का मेला नाहीं, नहीं गुरू नहिँ चेला।
सकल पसारा जेहि दिन नाहीं, जेहि दिन पुरुष अकेला ॥
गोरख हम तब के बैरागी, हमरी सुरत नाम से लागी ॥ १ ॥
ब्रम्हा नहिँ जब टोपी दीन्हा, बिस्नु नहीं जब टीका।
सिव सक्ती के जन्मो नाहीं, जबै जोग हम सीखा ॥ २ ॥
सतजुग में हम पहिरि पाँवरी[2], त्रेता झोरी झंडा।
द्वापर में हम अड़बँद[3] पहिरा, कलउ फिरयौं नौ खंडा ॥ ३ ॥
कासी में हम प्रगट भये हैं, रामानंद चिताये।
समरथ को परवाना लाये, हंस उबारन आये ॥ ४ ॥
सहजे सहजे मेला होइगा, जागी भगति उतंगा।
कहै कबीर सुनो हो गोरख, चलो सबद के संगा ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

साहिब हम में साहिब तुम में, जैसे तेल तिलन में।
मत कर बंदा गुमान दिल में, खोज देखिले तन में ॥ टेक ॥
चाँद सुरज के खंभ गाड़ि के, प्रान आसन कर घट में।
इँगला पिंगला सुरत लगा के, कमल पार कर घर में ॥ १ ॥
वा में बैठी सुखमन नारी, झुला झुलत बँगलन में।
कोटि सूर जहँ करते झिलि मिलि, नील सर सोती गगन में ॥२॥

---

(१) धुंधूकार मात्र। (२) खड़ाऊँ। (३) कोपीन।

तीन ताप मिटि गे देंही के, निर्मल होइ बैठी घट में।
पाँच चोर जहँ पकरि मँगाये, झंडा रोपे निरगुन में॥ ३॥
पाँच सहेली करत आरती, मनसा बाचा सतगुरु में।
अनहद घंटा बजे मृदंगा, तन सुख लेहि रतन में॥ ४॥
बिन पानी लागो जहँ बरषा, मोती देख नदिन में।
जहवाँ मनुआ बिलम रह्यो है, चलो हंस ब्रम्हँड में॥ ५॥
इकइस ब्रम्हँड छाइ रह्यो है, समझैं बिलैं सूरा।
मुरख गँवार कहा समझैंगे, ज्ञान कै घर है दूरा॥ ६॥
बड़े भाग अलमस्त रंग में, कबिरा बोलै घट में।
हंस उबारन दुक्ख निवारन, आवागवन मिटै छिन में॥ ७॥

॥ साखी॥

साँझ पड़े दिन बीतवे, चकवी दीन्हा रोइ।
चल चकवी वा देस को, जहाँ रैन ना होइ॥ ८॥
चकवी बिछुरी साँझ की, आन मिलै परभात[1]।
जो नर बिछुरे नाम से, दिवस मिलैं नहिँ रात॥ ९॥

॥ शब्द ३॥

साईं मोर बसत अगम पुरवा, जहँ गम न हमार॥ टेक॥
आठ कुँआ नौ बावड़ी, सोरह पनिहार।
भरल घइलवा[2] ढरकि गे हो, धन ठाढ़ी पछितात॥ १॥
छोटि मोटि डँड़िया चँदन कै हो, छोटे चार कहार।
जाय उतरिहैं वाही देसवाँ हो, जहँ कोइ न हमार॥ २॥
ऊँची महलिया साहिब कै हो, लगी बिषमी बजार।
पाप पुन्न दोउ वनिया हो, हीरा लाल बिकात॥ ३॥

(१) सवेरे। (२) घड़ा।

कहै कबीर सुन साइयाँ, मोरे आ हिये देस।
जो गये बहुरे नहीं, को कहत सँदेस ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हौ तुम हंसा सच्च लोक के, पड़े काल बस आई हो।
मनै सरूपी देव निरंजन, तुम्हें राखि भरमाई हो ॥ १ ॥
पाँच पचीस तीन के पिंजरा, तेहि माँ राखि छिपाई हो।
तुमको बिसरि गई सुधि घर की, महिमा अपन जनाई हो ॥ २ ॥
निरंकार निरगुन है माया, तुम को नाच नचाई हो।
चर्म दृष्टि का कुलफा दैके, चौरासी भरमाई हो ॥ ३ ॥
चार बेद है जा की स्वासा, ब्रम्हा अस्तुति गाई हो।
सो कित ब्रम्हा जक्त भुलाये, तेहि मारग सब जाई हो ॥ ४ ॥
सतगुरु बहुरि जीव के रच्छक, तिन से कर सुमताई हो।
तिन के मिले परम सुख उपजै, पद निर्बाना पाई हो ॥ ५ ॥
चारों जुग हम आन पुकारा, कोइ कोइ हंस चिताई हो।
कहै कबीर ताहि पहुँचाऊँ, सत्तपुरुष घर जाई हो ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

जागत जोगेसर[१] पाया मेरे रब जू, जागत जोगेसर पाया ॥टेक॥
हंसा एक गगन बिच बैठा, जिसके पंख न काया।
बिना चोंच का चून चुगत है, दसवें द्वार बसाया ॥ १ ॥
मूसा जाय बिल्ली सँग अरुझा, स्यारन सिंह डराया।
जल की मछरी उदयचल ब्याई, ऊनज[२] रुंड जमाया ॥ २ ॥
अलख पुरुष की अचला बस्ती, जा की सीतल छाया।
कहत कबीर सुन गोरख जोगी, जिन ढूँढ़ा तिन पाया ॥ ३ ॥

---

(१) भगवंत। (२) खंडित।

तीन ताप मिटि गे देंही के, निर्मल होइ बैठी घट में ।
पाँच चोर जहँ पकरि मँगाये, झंडा रोपे निरगुन में ॥ ३ ॥
पाँच सहेली करत आरती, मनसा बाचा सतगुरु में ।
अनहद घंटा बजै मृदंगा, तन सुख लेहि रतन में ॥ ४ ॥
बिन पानी लागो जहँ बरषा, मोती देख नदिन में ।
जहवाँ मनुआ बिलम रह्यो है, चलो हंस ब्रम्हँड में ॥ ५ ॥
इकइस ब्रम्हँड छाइ रह्यो है, समझैं बिर्ले सूरा ।
मुरख गँवार कहा समझैंगे, ज्ञान के घर है दूरा ॥ ६ ॥
बड़े भाग अलमस्त रंग में, कबिरा बोलै घट में ।
हंस उबारन दुक्ख निवारन, आवागवन मिटै छिन में ॥ ७ ॥

॥ साखी ॥

साँझ पड़े दिन बीतवे, चकवी दीन्हा रोइ ।
चल चकवी वा देस को, जहाँ रैन ना होइ ॥ ८ ॥
चकवी बिछुरी साँझ की, आन मिलै परभात[1] ।
जो नर बिछुरे नाम से, दिवस मिलैं नहिँ रात ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३ ॥

साईं मोर बसत अगम पुरवा, जहँ गम न हमार ॥ टेक ॥
आठ कुँआ नौ बावड़ी, सोरह पनिहार ।
भरल घइलवा[2] ढरकि गे हो, धन ठाढ़ी पछितात ॥ १ ॥
छोटि मोटि डँड़िया चँदन कै हो, छोटे चार कहार ।
जाय उतरिहैं वाही देसवाँ हो, जहँ कोइ न हमार ॥ २ ॥
ऊँची महलिया साहिब कै हो, लगी बिषमी बजार ।
पाप पुन्न दोउ बनिया हो, हीरा लाल बिकात ॥ ३ ॥

---

(१) सवेरे । (२) घड़ा ।

कहै कबीर सुन साइयाँ, मोरे आ हिये देस।
जो गये बहुरे नहीं, को कहत सँदेस ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हौ तुम हंसा सत्त लोक के, पड़े काल बस आई हो।
मनै सरूपी देव निरंजन, तुम्हैं राखि भरमाई हो ॥ १ ॥
पाँच पचीस तीन के पिंजरा, तेहि माँ राखि छिपाई हो।
तुमको बिसरि गई सुधि घर की, महिमा अपन जनाई हो ॥ २ ॥
निरंकार निरगुन है माया, तुम को नाच नचाई हो।
चर्म दृष्टि का कुलफा देके, चौरासी भरमाई हो ॥ ३ ॥
चार बेद है जा की स्वासा, ब्रम्हा अस्तुति गाई हो।
सो कित ब्रम्हा जक्त भुलाये, तेहि मारग सब जाई हो ॥ ४ ॥
सतगुरु बहुरि जीव के रच्छक, तिन से कर सुमताई हो।
तिन के मिले परम सुख उपजै, पद निर्बाना पाई हो ॥ ५ ॥
चारों जुग हम आन पुकारा, कोइ कोइ हंस चिताई हो।
कहै कबीर ताहि पहुँचाऊँ, सत्तपुरुष घर जाई हो ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

जागत जोगेसर[1] पाया मेरे रब जू, जागत जोगेसर पाया ॥टेक॥
हंसा एक गगन बिच बैठा, जिसके पंख न काया।
बिना चोंच का चून चुगत है, दसवें द्वार बसाया ॥ १ ॥
मूसा जाय बिल्ली सँग अरुझा, स्यारन सिंह डराया।
जल की मछरी उदयचल ब्याई, ऊनज[2] रुंड जमाया ॥ २ ॥
अलख पुरुष की अचला बस्ती, जा की सीतल छाया।
कहत कबीर सुन गोरख जोगी, जिन ढूँढ़ा तिन पाया ॥ ३ ॥

(१) भगवंत। (२) खंडित।

॥ शब्द ६ ॥

एक नगरिया तनिक सी में, पाँच बसैं किसान।
एक बसै धरती के ऊपर, एक अगिन में जान ॥ १ ॥
दोय बसैं पवना पानी में, एक बसै असमान।
पाँच पाँच उनकी घरवाली, तिन उठि माँगैं खान ॥ २ ॥
इनहीं से सब डुबकत डोलैं, मुकद्दम और दिवान।
खान पान सब न्यारा राखैं, मन में उन के मान ॥ ३ ॥
जग्त की आसा तजि दे हंसा, धरि ले पिय को ध्यान।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बैठो जाइ बिवान ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

चुवत अमी रस भरत ताल जहँ, सबद उठै असमानी हो ॥टेक॥
सरिता उमड़ सिन्ध को सोखै, नहिं कछु जात बखानी हो ॥१॥
चाँद सुरज तारागन नहिं वहँ, नहिं वहँ रैन बिहानी हो ॥२॥
बाजे बजैं सितार बाँसुरी, ररंकार मृदु बानी हो ॥३॥
कोटि झिलिमिली जहँ वहँ झलकै, बिनु जल बरसत पानी हो ॥ ४ ॥
सिव अज[१] बिस्नु सुरेस सारदा, निज निज मति उनमानी हो ॥ ५ ॥
दस अवतार एक तत राजैं, अस्तुति सहज से आनी हो ॥६॥
कहै कबीर भेद की बातैं, बिरला कोइ पहिचानी हो ॥७॥
कर पहिचान फेर नहिं आवै, जम जुलमी की खानी हो ॥८॥

॥ शब्द ८ ॥

नाम बिमल पकवान मनै हलवैया ॥ टेक ॥
ज्ञान कराही प्रेम घीव करि, मन मैदा कर सान।
ब्रम्ह अगिनि उदगारि के, इक अजब मिठाई छान ॥ १ ॥
तनै बनावो पालरा, मन पूरा करि सेर।
सुरत निरत कै डाँड़ी बनवो, तौलत ना कछु फेर ॥ २ ॥

(१) ब्रह्मा।

गगन मँडल में घर है तुम्हरा, त्रिकुटी लागि दुकान ।
उनमुनिया में रहनि बनावो, तब कछु सौदा बिकान ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, या गति अगम अपार ।
सत्त नाम साधु जन लादैं, बिष लादै संसार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

सब का साखी मेरा साईं ।
ब्रम्हा बिस्नु रुद्र ईसुर लौं, औ अब्याकृत नाहीं ॥ १ ॥
पाँच पचीस से सुमती करि ले, ये सब जग भरमाया ।
अकार ओंकार मकार मात्रा, इनके परे बताया ॥ २ ॥
जागृत सुपन सुषोपति तुरिया, इन तें न्यारा होई ।
राजस तामस सातिक निर्गुन, इन तें आगे सोई ॥ ३ ॥
थूल सूच्छम कारन महाकारन, इन मिलि भोग बखाना ।
बेस्व तेजस पराग आतमा, इन में सार ना जाना ॥ ४ ॥
रा पसंती मधमा बैखरि, चौबानी नहिं मानी ।
ाँच कोष नीचे करि देखो, इन में सार न जानी ॥ ५ ॥
ाँच ज्ञान औ पाँच कर्म हैं, ये दस इन्द्री जानो ।
चित सोइ अंतःकरन बखानी, इन में सार न मानो ॥ ६ ॥
कुरम सेस किरकिला धनंजय, देवदत्त[1] कँह देखो ।
चौदह इन्द्री चौदह इन्द्रा, इन में अलख न पेखो ॥ ७ ॥
तत पद त्वं पद और असी पद, बाच लच्छ पहिचाने ।
जहद लच्छना अजहद कहते, अजहद जहद बखाने ॥ ८ ॥
सतगुरु मिलै सत सबद लखावै, सार सबद बिलगावै ।
कहै कबीर सोई जन पूरा, जो न्यारा करि गावै ॥ ९ ॥

---

(१) पाँच पवनों के नाम ।

॥ शब्द १० ॥

हम से रहा न जाय, मुरलिया कै धुनि सुनि के ॥ टेक ॥
पाँच तत्त को पूतला, ख्याल रच्यो घट माहिँ ॥ १ ॥
बिना बसंत फूल इक फूलै, भँवर रह्यो अरुझाय ॥ २ ॥
गगन गराजे बिजुली चमकै, उठती हिये हिलोर ॥ ३ ॥
बिगसन कँवल औ मेघ बरीसै, चितवत प्रभु की ओर ॥ ४ ॥
तारी लगी तहाँ मन पहुँचा, गैब धुजा फहराय ॥ ५ ॥
कह कबीर कोइ संत बिबेकी, जीवत ही मरि जाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द ११ ॥

मारग बिहँग बतावैँ संत जन ॥ टेक ॥
कौने घर से जिव की उतपति, कौने घर को जावै ।
कहाँ जाइ जिव प्रलय होइगा, सो सुर तहाँ चढ़ावै ॥ १ ॥
गढ़ सुमेर वाही को कहिये, सुई नखा से जावै ।
भू मंडल से परिचय करि ले, पर्बत धौल लखावै ॥ २ ॥
द्वादस कोस[1] साहिब कै डेरा, तहाँ सुरत ठहरावै ।
वा को रंग रूप नहिं रेखा, कौन पुरुष गुन गावै ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जो यह पद लखि पावै ।
अमर लोक में झुलै हिंडोला, सतगुरु सब्द सुनावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥

हंसा कहो पुरातम[2] बात ॥ टेक ॥
कौन देस से आयो हंसा, उतरयो कौने घाट ।
कहँ हंसा बिसराम कियो है, कहाँ लगायो आस ॥ १ ॥
वंक देस से आयो हंसा, उतरयो भौजल घाट ।
भूलि परयो माया के बसि में, बिसरि गयो वो बात ॥ २ ॥

(१) स्थान। (२) प्राचीन।

अब ही हंसा चेतु सवेरा, चलो हमारे साथ।
संसय सोक वहाँ नहिं ब्यापै, नहीं काल कै त्रास ॥ ३ ॥
हुआँ मदन बन[1] फूलि रहे हैं, आवै सोहं बास।
मन भौंरा जहँ अरुझि रहो है, सुख की ना अभिलास ॥ ४ ॥
मकर[2] तार तें हम चढ़ि करते, बंकनाल परबेस।
वहि डोरी चढ़ि चढ़ि चले हंसा, सतगुरु के उपदेस ॥ ५ ॥
जहँ संतन की चौकी बनी है, ढुरै सोहंगम चौर।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु के सिर मौर ॥ ६ ॥

॥ शब्द १३ ॥

सो पंछी मोहिं कोइ न बतावै, जो बोलै घट माहीं रे।
अबरन बरन रूप नहिं रेखा, बैठा नाम की छाहीं रे ॥ टेक ॥
या तरवर में एक पखेरू, रुँगत चुँगत वह डोलै रे।
वा की सन्ध लखै नहिँ कोई, कौन भाव से बोलै रे ॥ १ ॥
दुम[3] डारि तहँ अति घनि छाया, पंछि बसेरा लेई रे।
आवै साँझ उड़ि जाइ सवेरा, मरम न काहू देई रे ॥ २ ॥
दुइ फल चाखि जाय रह्यो आगे, और नहीं दस बीसा रे।
अगम अपार निरन्तर बासा, आवत जात न दीसा रे ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह कछु अगम कहानी रे।
या पंछी को कौन ठौर है, बूझो पंडित ज्ञानी रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

ऐसा रंग कहाँ है भाई ॥ टेक ॥
सात दीप नौ खंड के बाहर, जहवाँ खोज लगाई।
वा देसवा के मरम न जानै, जहँ से चूनरि आई ॥ १ ॥

---

(१) कामबन, बसंत। (२) मकड़ी। (३) पेड़।

या चूनर में दाग बहुत है, संत कहैं गुहराई।
जो यह चूनर जुगति से ओढ़ै, काल निकट नहिं आई ॥ २ ॥
प्रेम नगर की गैल कठिन है, वहँ कोइ जान न पाई।
चाँद सुरज जहँ पौन न पानी, पतिया को लै जाई ॥ ३ ॥
सोहंकार से काया सिरजी, ता में रंग समाई।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बिरले यह घर पाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

जियत न मार मुआ मत लैयो, मास बिना मत ऐयो रे ॥ टेक ॥
परली पार इक बेल का बिरवा, वा के पात नहीं है रे।
होत पात चुगि जात मिरगवा, मृग के सीस नहीं है रे ॥ १ ॥
धनुष बान ले चढ़ा पारधी, धनुआ के परच नहीं है रे।
सरसर बान तकातक मारै, मिरगा के घाव नहीं है रे ॥ २ ॥
उर बिनु खुर बिनु चरन चोँच बिनु, उड़न पंख नहिं जा के रे।
जो कोइ हंसा मारि लियावै, रक्त माँस नहिं ता के रे ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह पद अतिहि दुहेला[1] रे।
जो या पद को अर्थ बतावै, सोई गुरू हम चेला रे ॥ ४ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सँग लागी मेरे ठगनी जानि पड़ी ॥ टेक ॥
हमरे बलम के प्रेम पटूका, चूनर लेत सुहाग भरी ॥ १ ॥
रंग महल बिच नींद परी है, पाँचो चोर मसान मरी ॥ २ ॥
साखी सबद नवो दरवाजे, मूँदि खोलि ले दस झँझरी[2] ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह दुनिया जंजाल भरी ॥ ४ ॥

(१) कठिन। (२) तीसरा तिल अथवा शिव नेत्र जो जोगियों का सवँ द्वार है।

॥ शब्द १७ ॥

मेरी नजर में मोती आया है ॥ टेक ॥
कोइ कहे हलका कोइ कहे भारी, दूनों भूल भुलाया है ॥ १ ॥
ब्रम्हा बिस्नु महेसुर थाके, तिनहूँ खोज न पाया है ॥ २ ॥
संकर सेस औ सारद हारे, पढ़ि रटि गुन बहु गाया है ॥ ३ ॥
है तिल के तिल के तिल भीतर, बिरले साधू पाया है ॥ ४ ॥
चहुँ दल कँवल तिकुटी साजे, ओंकार दरसाया है ॥ ५ ॥
ररंकार पद सेत सुन्न मध, षटदल कँवल बताया है ॥ ६ ॥
पारब्रम्ह महासुन्न मँझारा, सोइ निःअच्छर रहाया है ॥ ७ ॥
भँवर गुफा में सोहं राजे, मुरली अधिक बजाया है ॥ ८ ॥
सत्तलोक सत पुरुष बिराजे, अलख अगम दोउ भाया है ॥ ९ ॥
पुरुष अनामी सब पर स्वामी, ब्रम्हँड पार जो गाया है ॥१०॥
यह सब बातें देही माहीं, प्रतिबिंब अंड जो पाया है ॥११॥
प्रतिबिंब पिंड ब्रम्हँड है नकली, असली पार बताया है ॥१२॥
कहै कबीर सतलोक सार है, यहँ पुरुष नियारा पाया है ॥१३॥

॥ शब्द १८ ॥

तू सूरत नैन निहार, यह अंड के पारा है ।
तू हिरदे सोच बिचार, यह देस हमारा है ॥१॥
पहिले ध्यान गुरन का धारो, सुरत निरत मन पवन चितारो ।
सुहेलना[1] धुन में नाम उचारो, तब सतगुरु लहो दीदारा है ॥२॥
सतगुरु दरस होइ जब भाई, वे दें तुम को नाम चिताई ।
सुरत सबद दोउ भेद बताई, तब देखे अंड के पारा है ॥३॥
सतगुरु कृपा दृष्टि पहिचाना, अंड सिखर बेहद मैदाना ।
सहज दास तहँ रोपा थाना, जो अग्रदीप सरदारा है ॥४॥

---

(१) सहज ।

सात सुन्न बेहद के माहीं, सात संख तिन की ऊँचाई ।
तीनि सुन्न लौं काल कहाई, आगे सत्त पसारा है ॥५॥
पिरथम अभय सुन्न है भाई, कन्या निकल यहँ बाहर आई ।
जोग संतायन[1] पूछा वाही, (कहा) मम दारा[2] वह भरतारा है ॥६॥
दूजे सकल सुन्न करि गाई, माया सहित निरंजन राई ।
अमर कोट के नकल बनाई, जिन अँड मधि रच्यो पसारा है ॥७॥
तीजे है महसुन्न सुखाली, महाकाल यहँ कन्या ग्रासी ।
जोग संतायन आये अबिनासी, जिन गलनख छेद निकारा है ॥८॥
चौथे सुन्न अजोख कहाई, सुद्ध ब्रम्ह पुर्ष ध्यान समाई ।
आद्या यहँ बीजा ले आई, देखो दृष्टि पसारा है ॥९॥
पंचम सुन्न अलेल कहाई, तहँ अदली बंदीवान रहाई ।
जिनका सतगुरु न्याव चुकाई, जहँ गादी अदली सारा है ॥१०॥
षष्ठे सार सुन्न कहलाई, सार भँडार याही के माहीं ।
नीचे रचना जाहि रचाई, जा का सकल पसारा है ॥११॥
सतवेँ सत्त सुन्न कहलाई, सत भँडार याही के माहीं ।
निःतत रचना ताहि रचाई, जो सबहिन तेँ न्यारा है ॥१२॥
सत सुन ऊपर सत की नगरी, बाट बिहंगम बाँको डगरी ।
सो पहुँचे चाले त्रिन पग री, ऐसा खेल अपारा है ॥१३॥
पहिली चकरी समाध कहाई, जिन हंसन सतगुरु मति पाई ।
वेद भर्म सब दियो उड़ाई, तिरगुन तजि भये न्यारा है ॥१४॥
दूजी चकरी अगाध कहाई, जिन सतगुरु सँग द्रोह कराई ।
पीछे आनि गहे सरनाई, सो यहँ आन पधारा है ॥१५॥
तीजी चकरी मुनिकर नामा, जिन मुनियन सतगुरु मति जाना ।
सो मुनियन यहँ आइ रहाना, करम भरम तजि डारा है ॥१६॥

---

(१) कबीर साहिब । (२) स्त्री ।

चौथी चकरी धुनि है भाई, जिन हंसन धुनि ध्यान लगाई ।
धुनि सँग पहुँचे हमरे पाहीं, यह धुनि सबद मँझारा है ॥१७॥
पंचम चकरी रास जो भाखी, अलमीना है तहँ मधि झाँकी ।
लीला कोट अनंत वहाँ की, जहँ रासबिलास अपारा है ॥१८॥
षष्टम चकरी बिलास कहाई, जिन सतगुरु सँग प्रीति निबाही ।
छुटते देंह जगह यहँ पाई, फिर नहिं भव अवतारा है ॥१६॥
सतवीं चकरी बिनोद कहानो, कोटिन बंस गुरन तहँ जानो ।
कलि में बोध किया ज्यों भानो, अंधकार खोया उजियारा है ॥२०॥
अठवीं चकरी अनुरोध बखाना, तहाँ जुलहदी ताना ताना ।
जा का नाम कबीर बखाना, जो सब संतन सिर धारा है ॥२१॥
ऐसी ऐसी सहस करोड़ी, ऊपर तले रची ज्यों पौड़ी[1] ।
गादी अदली रही सिर मौरी, जहँ सतगुरु बंदीछोरा है ॥२२॥
अनुरोधी के ऊपर भाई, पद निर्बान के नीचे ताही ।
पाँच संख है याहि उँचाई, जहँ अद्‌भुत ठाठ पसारा है ॥२३॥
सोलह सुत हित दीप रचाई, सब सुत रहैं तासु के माहीं ।
गादी अदल कबीर यहाँ ही, जो सबहिन में सरदारा है ॥२४॥
पद निरबान है अनंत अपारा, नूतन सूरत लोक सुधारा ।
सत्त पुरुष नूतन तन धारा, जो सतगुरु संतन सारा है ॥२५॥
आगे सत्तलोक है भाई, संखन कोस तासु ऊँचाई ।
हीरा पन्ना लाल जड़ाई, जहँ अद्‌भुत खेल अपारा है ॥२६॥
बाग बगीचे खिली फुलवारी, अमृत नहरें हो रहिं जारी ।
हंसा केल करत तहँ भारी, जहँ अनहद घुरै अपारा है ॥२७॥
ता मधि अधर सिंघासन गाजे, पुरुष सबद तहँ अधिक बिराजे ।
कोटिन सूर रोम इक लाजे, ऐसा पुरुष दीदारा है ॥२८॥

---

(१) सीढ़ी ।

॥ शब्द २० ॥

चरखा चलै सुरत बिरहिनि का ॥टेक ॥
काया नगरी बनी अति सुन्दर, महल बना चेतन का ।
सुरत भाँवरी होत गगन में, पीढ़ा ज्ञान रतन का ॥ १ ॥
चित चमरख तिरगुन के टेकुआ, माल मनोरथ मन का ।
पिउनी पाँच पचीस रंग की, कुखरी नाम भजन का ॥ २ ॥
दृढ़ बैराग गाड़ि दुइ खूँटा, मंझा[1] जोग जुगत का ।
द्वादस नाम धरो दुइ पखुरी, हथिया सार सबद का ॥ ३ ॥
मिहीन सूत संत जन कातैं, माँझा[2] प्रेम भगति का ।
करै कबीर सुनो भाई साधो, जुगन जुगन सत मत का ॥ ४ ॥

॥ शब्द २१ ॥

दिन दस नैहरवाँ खेलि ले, निज सासुर जाना हो ॥ टेक ॥
इक तो अँधेरी कोठरी, ता में दिया न बाती हो ।
बहियाँ पकरि जम लै चले, कोइ संग न साथी हो ॥ १ ॥
कोठा ऊपर कोठरी, जोगी धुनिया रमाया हो ।
अंग भभूत लगाइ के, जोगी रैनि गँवाया हो ॥ २ ॥
गंग जमुन बिच रेतवा, तहँ बाग लगाया हो ।
कच्ची कली इक तोरि के, मलिया पछिताया हो ॥ ३ ॥
गिरि परवत के माछरी, भौसागर आया हो ।
कहै कबीर धर्मदास से, जम बंसी लगाया हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २२ ॥

काया गढ़ जीतो रे भाई ॥ टेक ॥
ब्रम्ह कोट चहुँ ओर मँडो है, माया ख्याल बनाई ।
कनक कामिनी फंदा रोपे, जग राखे बिलमाई ॥ १ ॥

---

(१) मँगरी । (२) लेई जिस से सूत को माँजते हैं ।

पाँचौ मुरचा गढ़ के भीतर, तहाँ लाँघि कै जाई।
आसा तृस्ना मनसा कहिये, तृगुन बनी जो खाई ॥ २ ॥
पचिस सुभाव जहँ निसि दिन ब्यापै, काम क्रोध दोउ भाई।
लालच लोभ खड़े दरवाजे, मोह करै ठकुराई ॥ ३ ॥
मूल कँवल पर आसन कीन्हो, गुरु कौ सीस नवाई।
छवो कँवल इक सुर में बेधे, चढ़ी गगन गढ़ जाई ॥ ४ ॥
ज्ञान कै घोड़ा ध्यान कै पाखर, जुक्ति कै जीन बनाई।
तत्त सुकृत दोउ लगी पावरी,[1] बिबेक लगाम लगाई ॥ ५ ॥
सील छिमा के बख्तर पहिरे, तत तरवार गहाई।
साजन सुरति चढ़ि छाजे ऊपर, निरत के साँग[2] गहाई ॥ ६ ॥
सतएँ कँवल त्रिकुट के भीतर, वहाँ पहुँचि के जाई।
जोति सरूपी देव निरंजन, वेदन उन को गाई ॥ ७ ॥
बंकनाल की औघट घाटी, तहाँ न पग ठहराई।
ओअं ररंग अड़े जहँ दुइ दल, अजपा नाम सहाई ॥ ८ ॥
जोजन एक खरब के आगे, पुरुष बिदेह रहाई।
सेत कँवल निसि बासर फूले, सोभा बरनि न जाई ॥ ९ ॥
सेत छत्र और सेत सिंघासन, सेत धुजा फहराई।
कोटिन भानु चन्द्र तारागन, छत्र की छाँह रहाई ॥ १० ॥
मन में मन नैनन में नैना, मन नैन एक ह्वै जाई।
सुरत सोहागिनि मिलत पिया को, तन कै तपन बुझाई ॥ ११ ॥
द्वादस ऊपर अजपा फेरै, मनै पवन थकि जाई।
कहै कबीर मिले गुरु पूरे, सबद में सुरत मिलाई ॥ १२ ॥

---

(१) रकाब। (२) बरछी, भाला।

॥ शब्द २३ ॥

सुगना बोल तैं निज नाम ॥ टेक ॥

आवत जात बिलम[1] नहिं लागै, मंजिल आठो जाम ।
लाखन कोस पलक में जावे, कहूँ न करै मुकाम ॥ १ ॥
हाथ पाँव मुख पेट पीठ नहिं, नहीं लाल ना सेत न स्याम ।
पंखन बिना उड़ै निसि बासर, सीत लगै नहिं घाम ॥ २ ॥
बेद कहै सरगुन के आगे, निरगुन का बिसराम ।
सरगुन निरगुन तजहु सोहागिनि, जाइ पहुँच निज धाम ॥ ३ ॥
लाल गुलाल बाग हंसन में, पंछी करै अराम ।
दुख सुख वहाँ कहूँ नहिं ब्यापे, दरसन आठो जाम ॥ ४ ॥
नूरै ओढ़न नूरै डासन, नूरै को सिरहान ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु नूर तमाम ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

चलो जहँ बसत पुरुष निर्बाना ॥ टेक ॥

अवगति गति जहँ गति गम नाहीं, दुइ अंगुल परिमाना ।
रबि ससि दूनोँ पौन चलतु हैं, तेहि बिच धरु मन ध्याना ॥ १ ॥
तीन सुन्न के पार बसतु है, चौथा तहँ अस्थाना ।
उपजा ज्ञान ध्यान दृढ़ जागा, मगन भया मस्ताना ॥ २ ॥
पोहि के डोरी चढ़ो गगन पर, सुरत धरो सत नामा ।
द्वादस चलै दसो पर ठहरै, ऐसा निरगुन नामा ॥ ३ ॥
अजर अमर जहँ जरा मरन नहिं, पहुँचे संत सुजाना ।
बहुतक चढ़ि चढ़ि के फिरि आये, बिरला जन ठहराना ॥ ४ ॥
सबदै निरखि परखि छबि झलके, सुमिरन मूल ठिकाना ।
उलटि पवन षट चक्कर वेधै, नैनन पियत अघाना ॥ ५ ॥

---

(१) देर।

सबदै सबद प्रगट भये बाहर, कहि गये बेद पुराना।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब्द में सुरत समाना॥ ६॥

॥ शब्द २५ ॥

दूर गवन तेरो हंसा हो, घर अगम अपार॥ टेक॥
कहिं वहँ काया नहिं वहँ माया, नहिं वहँ त्रिगुन पसार।
चार बरन उहवाँ हैं नाहीं, ना है कुल ब्योहार॥ १॥
नौ छः चौदह बिद्या नाहीं, नहिं वहँ बेद बिचार।
जप तप संजम तीरथ नाहीं, नाहीं नेम अचार॥ २॥
पाँच तत्त नहिं उत्पति भइलैं, सो परलय के पार।
तीन देव ना तेंतिस कोटी, नाहिं दसो अवतार॥ ३॥
सोरह संख के आगे होई, समरथ कर दरबार।
सेत सिंघासन आसन बैठे, जहाँ सबद झनकार॥ ४॥
पुरुष रूप कहा बरनौं महिमा, तिन गति अपरम्पार।
कोटि भानु की सोभा जिन्ह के, इक इक रोम उजार॥ ५॥
छर अच्छर दूनौं से न्यारा, सोई नाम हमार।
सार सबद को लेइके आयो, मिरतू लोक मँझार॥ ६॥
चार गुरू मिलि थापल हो, जग के हैं कड़िहार।
उन कर बहियाँ पकरि रहो हो, हंसा उतरौ पार॥ ७॥
जम्बू दीप के तुम सब हंसा, गहि लो सबद हमार।
दास कबीरा अब की दीहल, निर्गुन कै टकसार॥ ८॥

॥ शब्द २६ ॥

चलु हंसा वा देस, जहाँ तोर पिया बसै॥ टेक॥
एहि देसवा में अर्द्धमुख कुइयाँ, साँकर वाके मोहड़[1]।
सुरत सोहागिनि है पनिहारिनि, भरै ठाढ़ बिन डोर॥ १॥

(१) जिसका मुँह तंग है।

वहि देसवाँ बादर ना उमड़ै, रिमझिम बरसै मेह।
चौबारे में बैठि रहो ना, जा भीजहु निर्देह ॥ २ ॥
वहि देसवाँ में निच पूर्निमा, कबहु न होइ अँधेर।
एक सुरज के कौन बतावै, कोटिन सुरज उँजेर[1] ॥ ३ ॥
लछमी वा घर झाड़ू देत है, सिव करते कोतवाली।
ब्रम्हा वाके बने टहलुवा, बिस्नु करै चरवाही ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, ई पद है निर्बानी।
जो ई पद कै अरथ लगावै, पहुँचै मूल ठिकानी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २७ ॥

चरखा नहीं निगोड़ा चलता ॥ टेक ॥
पाँच तत्त का बना है चरखा, तीन गुनन में गलता ॥ १ ॥
माल टूटि तीन भया टुकड़ा, टेकुवा होइ गया टेढ़ा ॥ २ ॥
माँजत माँजत हार गया है, धागा नहीं निकलता ॥ ३ ॥
मित्र बढ़ैया दूर बसत है, का के घर दे आया ॥ ४ ॥
ठोकत ठोकत हार गया है, तो भी नहीं सम्हलता ॥ ५ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जले बिना नहिं छुटता ॥ ६ ॥

॥ शब्द २८ ॥

जिन पिया प्रेम रस प्याला, सोई जन है मतवाला ॥ १ ॥
मूल चक्र को बंद लगावै, उलटी पवन चढ़ावै।
जरा मरन भय ब्यापै नाहीं, सतगुरु सरनी आवै ॥ २ ॥
बिन धरनी हरि मंदिर देखा, बिन सागर झर पानी।
बिन दीपक मंदिर उँजियारा, बोलै गुरुमुख बानी ॥ ३ ॥
इँगला पिंगला सुखमन नाड़ी, उनमुन के घर मेला।
अष्ट कँवल पर कँवल बिराजै, सो साहिब अलबेला ॥ ४ ॥

---

(१) प्रकाश।

चाँद न सुरज दिवस नहिं रजनी, तहाँ सुरत लौ लावै ।
अमृत पियै मगन होय बैठै, अनहद नाद बजावै ॥ ५ ॥
चाँद सुरज एकै घरि राखै, भूला मन समुझावै ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सहज सहज गुन गावै ॥ ६ ॥

प्रेम

॥ शब्द १ ॥

आज मेरे सतगुरु आये

रहस रहस मैं अँगना बुहारों, मोतियन चौक पुराये ॥ १ ॥
चरन पखारि चरनामृत करिके, सब साधन बरताऊँ ।
पाँच सखी मिलि मंगल गावैं, सबद सुरत लौ लाऊँ ॥ २ ॥
करूँ आरती प्रेम निछावर, पल पल बलि बलि जाऊँ ।
कहै कबीर दया सतगुरु की, परम पुरुष बर पाऊँ ॥ ३ ॥

॥ शब्द २ ॥

आज सुबेलो[१] सुहावनो, सतगुरु मेरे आये ।
चंदन अगर बसाये, मोतियन चौक पुराये ॥ १ ॥
सेत सिंघासन बैठे सतगुरु, सुरत निरत करि देखा ।
साध कृपा तें दरसन पाये, साधू संग बिसेखा ॥ २ ॥
घर आँगन में आनँद होवै, सुरत रही भरपूर ।
झरि झरि पड़ै अमीरस दुर्लभ, है नेड़े नहिं दूर ॥ ३ ॥
द्वादस मद्ध देखि ले जोई, बिच है आपै आपा ।
त्रिकुटी मध तू सेज निरखि ले, नहिं मंतर नहिं जापा ॥ ४ ॥
अगम अगाध गती जो लखिहै, सो साहिब को जीवा ।
कहै कबीर धरमदास से, भेंटि ले अपनो पीवा ॥ ५ ॥

---

(१) अच्छी वेला या समय ।

पिय को मारग सुगम है, तेरो चाल अनेड़ा।
नाचि न जाने बावरी, कहै आँगन टेढ़ा ॥ ३ ॥
जो तू नाचन नीकसी, तो घूँघट कैसा।
घूँघट का पट खोलि दे, मत करै अँदेसा ॥ ४ ॥
चंचल मन इत उत फिरै, पतिबर्त जनावै।
सेवा लागी आन की, पिय कैसे पावै ॥ ५ ॥
पिय खोजत ब्रम्हा थके, सुर नर मुनि देवा।
कहै कबीर बिचारि के, कर सतगुरु सेवा ॥ ६ ॥

॥ शब्द ८ ॥

आज सुहाग की रात पियारी।
क्या सोवै मिलने की बारी ॥ १ ॥
आये ढोल बजावत बाजन।
बनरी[1] ढाँपि रही मुख लाजन।
खोल घुँघट मुख देखैगा साजन ॥ २ ॥
सिर सोहै सेहरा हाथ सोहै कँगना।
झूमत आवै बन्ना[2] मेरे अँगना ॥ ३ ॥
कहत कबीर कर दरपन लीजे।

मंदिर महा भयो उजियारा।
लै सूती अपनो पिय प्यारा ॥ ३ ॥
मैं निरास जो नौनिधि पाई।
कहा करूँ पिय तुमरी बड़ाई ॥ ४ ॥
कहै कबीर मैं कछु नहिं कीन्हा।
सहज सुहाग पिया मोहिँ दीन्हा ॥ ५ ॥

॥ शब्द १० ॥

हूँ वारी[1] मुख फेर[2] पियारे।
करवट दे मोहिँ काहे को मारे ॥ १ ॥
करवत[3] भला न करवट तोरी।
लाग गले सुन बिनती मोरी ॥ २ ॥
हम तुम बीच भया नहिँ कोई।
तुमहिँ सो कंत नारि हम होई ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो नर लोई।
अब तुम्हरी परतीति न होई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

सूतल रहलूँ मैं नींद भरि हो, गुरु दिहलैं जगाइ ॥ टेक ॥
चरन कँवल कै अंजन हो, नैना लेलूँ लगाइ।
जा से निंदिया न आवै हो, नहिँ तन अलसाइ ॥ १ ॥
गुरु के बचन निज सागर हो, चलु चली हो नहाइ।
जनम जनम के पपवा हो, छिन में डारब धुवाइ ॥ २ ॥
वहि तन कै जग दीप कियो, सुत बतिया लगाइ।
पाँच तत्त कै तेल चुआये, ब्रम्ह अगिन जगाइ ॥ ३ ॥

---

(१) बलिहारी। (२) मेरी तरफ़ मुँह कर। (३) छुरी।

सुमति गहनवाँ पहिरलौँ हो, कुमति दिहलौँ उतार।
निर्गुन मँगिया सँवरलौँ हो, निर्भय सेंदुर लाइ॥ ४॥
प्रेम पियाला पियाइ के हो, गुरु दियो बौराइ।
बिरह अगिन तन तलफै हो, जिय कछु न सुहाइ॥ ५॥
ऊँच अटरिया चढ़ि बैठलुँ हो, जहँ काल न खाइ।
कहै कबीर बिचारि के हो, जम देखि डेराय॥ ६॥

॥ शब्द १२॥

तेरो को है रोकनहार, मगन से आव चली॥ टेक॥
लोक लाज कुल की मर्जादा, सिर से डारि अली।
पटक्यो भार मोह माया को, निरभय राह गही॥ १॥
काम क्रोध हंकार कलपना, दुरमति दूर करी।
मान अभिमान दोऊ घर पटक्यो, होइ निसंक रली॥ २॥
पाँच पचीस करे बस अपने, करि गुरु ज्ञान छड़ी।
अगल बगल के मारि उड़ाये, सनमुख डगर धरी॥ ३॥
दया धर्म हिरदे धरि राख्यो, पर उपकार बड़ी।
दया सरूप सकल जीवन पर, ज्ञान गुमान भरी॥ ४॥
छिमा सील संतोष धीर धरि, करि सिंगार खड़ी।
भई हुलास मिली जब पिय को, जगत बिसारि चली॥ ५॥
चुनरी सबद बिबेक पहिरि के, घर की खबर परी।
कपट किवरिया खोल अंतर की, सतगुरु मेहर करी॥ ६॥
दीपक ज्ञान धरे कर अपने, पिय को मिलन चली।
बिहसत बदन रु मगन छबीली, ज्योँ फूली कँवल कली॥ ७॥
देख पिया को रूप मगन भइ, आनँद प्रेम भरी।
कहै कबीर मिली जब पिय से, पिय हिय लागि रही॥ ८॥

॥ शब्द १३ ॥

सबद की चोट लगी है तन में ।
घर नहिँ चैन चैन नहिँ बन में ॥ १ ॥
ढूँढ़त फिरौं पीव नहिँ पावौं ।
औषधि मूर खाइ गुजरावौं[1] ॥ २ ॥
तुम से बैद न हम से रोगी ।
बिन दिदार क्यौं जिये बियोगी ॥ ३ ॥
एकै रंग रँगी सब नारी ।
ना जानौं को पिय की प्यारी ॥ ४ ॥
कहै कबीर कोइ गुरुमुख पावै ।
बिन नैनन दीदार दिखावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द १४ ॥

चली मैं खोज में पिय की, मिटी नहिं सोच यह जिय की ॥१॥
रहै नित पासही मेरे, न पाऊँ यार को हेरे ॥२॥
बिकल चहुँ ओर को धाऊँ, तबहुँ नहिं कंत को पाऊँ ॥३॥
धरूँ केहि भाँति से धीरा, गयो गिरि हाथ से हीरा ॥४॥
कटी जब नैन की झाईं[2], लख्यो तब गगन में साईं ॥५॥
कबीरा सबद कहि भासा, नैन में यार को बासा ॥६॥

॥ शब्द १५ ॥

राखि लेहु हम तें बिगरी ॥ टेक ॥
सील धरम जप भगति न कीन्ही, हौं अभिमान टेढ़ पगरी[3] ॥१॥
अमर जानि संची यह काया, सो मिथ्या काँची गगरी ॥२॥
जिन निवाज[4] साज सब कीन्हे, तिनहिं बिसारि और लगरी ॥३॥

---

(१) नाम के आधार से जिऊँ। (२) जाला। (३) पगड़ी। (४) दया करके।

संधिक[१] साध कबहु नहिं भेट्यो, सरन परै जिनकी पग[२] री ॥४॥
कहै कबीर इक बिनती सुनिये, मत घालो[३] जम की खव[४] री ॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

दरस तुम्हारे दुर्लभ, मैं तो भइ हुँ दिवानी ॥ टेक ॥
ठाँव ठाँव पूजा करैं, मिलि सखी सयानी ।
पिय के मरम न जानहीं, सब भर्म भुलानी ॥ १ ॥
बैस[५] गई पिय ना मिले, जरि जात जवानी ।
आइ बुढ़ापा घेरि लियो, अब का पछितानी ॥ २ ॥
पानन सी पियरी भई, दिन दिन पियरानी ।
आग लगै उहि जोबना, सोवै सेज बिरानी ॥ ३ ॥
अजहूँ तेरो ना गयो, सुमिरो सतनामा ।
कहै कबीर धर्मदास से, गहु पद निर्बाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द १७ ॥

दरमाँदा[६] ठाढ़ो तुम दरबार ॥ टेक ॥
तुम बिनु सुरत करै को मेरी, दरसन दीजे खोल किवार ॥१॥
तुम सम धनी उदार न कोऊ, सर्वन सुनियत सुजस तुम्हार ॥ २ ॥
माँगौं कौन रंक[७] सब देखौं, तुम ही तें मेरो निस्तार[८] ॥३॥
कहत कबीर तुम समरथ दाता, पूरन पद को देत न बार[९] ॥४॥

॥ शब्द १८ ॥

सुनहु अहो मेरी राँध[१०] परोसिन, आज सुहागिन अनँद भरी ॥ टेक
सबद बान सतगुरु ने मार्यो, सोवत तें धन चौंक परी ।
बहुत दिनन तें गइ मैं खेलन, बिन सतगुरु अब भटकि मरी ॥१॥

---

(१) मालिक से मेला कराने वाला । (२) चरन । (३) डालो । (४) खड्ड ।
(५) उमर । (६) दीन । (७) दरिद्र । (८) उबार (९) देर । (१०) एक दिल ।

या तन में बटमार बहुत, छिन छिन रोकत घरी घरी।
जब प्रीतम कि धुनि सुनि पाई, छाड़ि सखिन भइ बिलग खड़ी ॥ २ ॥
पाँच पचीस किये बस अपने, पिया मिलन की चाह धरी।
सबद बिबेक चुनरिया पहिरे, ज्ञान गली में भई खड़ी ॥ ३ ॥
दीपक ज्ञान लिये कर अपने, निरखि पुरुष भइ मोद[1] भरी।
मिटि गौ भम दूरि भयो धोखो, उलटि महल में खबर परी॥४॥
देखि पिया को रूप मगन भइ, निरखि सेज पर धाय चढ़ी।
करत बिलास पिया अपने सँग, पौढ़ि सेज पर प्रेम भरी ॥५॥
सुखसागर से बिलसन लागी, बिछुरे पिय धन[2] मिलि जो गई।
कहै कबीर मिलि जब पिय से, जनम जनम को अमर भई ॥६॥

॥ शब्द १९ ॥

अब तोहि जान न द्यों पिउ प्यारे।
ज्यों भावे त्यों रहो हमारे ॥ १ ॥
बहुत दिनन के बिछुड़े पाये।
भाग भले घर बैठे आये ॥ २ ॥
चरनन लागि करौं सेवकाई।
प्रेम प्रीति राखौं अरुझाई ॥ ३ ॥
आज बसौ मम मंदिर चोखे।
कहै कबीर पड़ौं नहिं धोखे ॥ ४ ॥

॥ शब्द २० ॥

अबिनासी दुलहा कब मिलिहौ, भक्तन रछपाल[3] ॥ टेक ॥
जल उपजी जल ही से नेहा, रटत पियास पियास।
मैं बिरहिनि ठाढ़ी मग जोऊँ[4] प्रीतम तुम्हरी आस ॥ १ ॥

---

(१) आनन्द। (२) स्त्री। (३) रक्षा करने वाले (४) राह देखूँ।

छोड़्यो गेह[1] नेह लगि तुमसे, भई चरन लौलीन ।
तालाबेलि[2] होत घट भीतर, जैसे जल बिन मीन ॥ २ ॥
दिवस न भूख रैन नहिँ निद्रा, घर अँगना न सुहाय ।
सेजरिया बैरिनि भइ हम को, जागत रैन बिहाय[3] ॥ ३ ॥
हम तो तुम्हरी दासी सजना, तुम हमरे भरतार ।
दीनदयाल दया करि आओ, समरथ सिरजनहार ॥ ४ ॥
कै हम प्रान तजतु हैं प्यारे, कै अपनी करि लेव ।
दास कबीर बिरह अति बाढ़्यो, अब तो दरसन देव ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

हम तो एक ही करि जानो ॥ टेक ॥
दोय कहै तेहि को दुबिधा है, जिन सत नाम न जानो ॥ १ ॥
एकै पवन एक ही पानी, एकै जोति समानो ॥ २ ॥
इक मट्टी के घड़ गढ़ेला, एकै कोहँरा[4] सानो ॥ ३ ॥
माया देखि के जगत लुभानो, काहे रे नर गरबानो[5] ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, गुरु के हाथ काहे न बिकानो ॥५॥

॥ शब्द २२ ॥

मैं देख्यो तोरी नगरी अजब जोगिया ॥ टेक ॥
जोगी कै मड़ैया अजब अनूप ।
उलटी नीम दई महबूब ॥ १ ॥
जट बिन लट बिन अँग न भभूत ।
लखि न पड़ै जोगी ऐसो अवधूत ॥ २ ॥
जोगिया की नगरी बसो मत कोय ।
जोरे बसै सो जोगिया होय ॥ ३ ॥

---

(१) घर । (२) बेकली (३) बीतती है । (४) कुम्हार (५) घमंड करता है ।

कह कबीर जोगी बरनो न जाय।
जहँ देखो गुरुगम पतियाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

मोरी रँगी चुनरिया धो धुबिया ॥ १ ॥
जनम जनम के दाग चुनर के, सतसँग जल से छुड़ा धुबिया ॥२॥
सतगुरु ज्ञान मिले फल चारी, सबद कै कलप चढ़ा धुबिया ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, गुरु के चरन चित ला धुबिया ॥४॥

॥ शब्द २४ ॥

चुनरिया पचरँग हमैं न सुहाय ॥ टेक ॥
पाँच रंग कै हमरी चुनरिया,
नाम बिना रँग फीक दिखाय ॥ १ ॥
यह चुनरी मोरे मैके से आई,
अपने गुरु से ल्योँ बदलाय ॥ २ ॥
चुनरि पहिरि धन निकसी बजरिया,
काल बली लिहले पछुवाय ॥ ३ ॥
तोरी चुनर पर साहिब रीझै,
जम दहिजरवा फिरि फिरि जाय ॥ ४ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो,
को अब आवै को घर जाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

कौन रँगरेजवा रँगै मोरी चुनरी ॥ टेक ॥
पाँच तत्त कै बनी चुनरिया,
चुनरी पहिरि के लागै बड़ सुँदरी ॥ १ ॥

टेकुआ तागा कर्म कै धागा,
गर बिच हरवा हाथ बिच मुँदरी ॥ २ ॥
सोरहो सिंगार बतीसो अभरन,
पिय पिय रटत पिया सँग घुमरी ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो,
बिन सतसंग कौन बिधि सुधरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २६ ॥

हुआ जब इस्क मस्ताना । कहैं सब लोग दीवाना ॥ १ ॥
जिसे लागी सोई जाना । कहे से दर्द क्या माना ॥ २ ॥
कीट को ले उड़ी भृङ्गी । किया उन आप सों रंगी ॥ ३ ॥
सुषमना तत्त झनकारा । लखै कोइ नाम का प्यारा ॥ ४ ॥
मैं तेरा दास हूँ बंदा । तुझी के नेह में फंदा ॥ ५ ॥
ममत की खान में डूबा । कहो कस मिले महबूबा ॥ ६ ॥
साहिब टुक मिहर से हेरो । दास को जक्क से फेरो ॥ ७ ॥
कबीरा तालिबा[1] तेरा । किया दिल बीच में डेरा ॥ ८ ॥

॥ शब्द २७ ॥

सुन सतगुरु की तान नींद नहिं आती ।
बिरहा में सूरत गई पछाड़े खाती ॥ टेक ॥
तेरे घट में हुआ अँधेर भरम की राती ।
भइ न पिय से भेंट रही पछितातो ॥ १ ॥
सखि नैन सैन से खोजि ढूँढ़ि लेआती ।
मेरे पिया मिले सुख चैन नाम गुन गाती ॥ २ ॥

---

(१) खोजी ।

तेरि आवागवन की त्रास सबै मिटि जाती।
छबि देखत भइ है निहाल काल मुरझाती ॥ ३ ॥
सखि मानसरोवर चलो हंस जहँ पाँती।
कहै कबीर बिचार सीप मिलि स्वाँती ॥ ४ ॥

॥ शब्द २८ ॥

तलफै बिन बालम मोरा जिया ॥ टेक ॥
दिन नहिँ चैन रैन नहिँ निंदिया।
तलफ तलफ के भोर किया ॥ १ ॥
तन मन मोर रहट अस डोलै।
सूनी सेज पर जनम छिया[1] ॥ २ ॥
नैन थकित भये पन्थ न सूझै।
साईँ बेदरदी सुधि न लिया ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो।
हरो पीर दुख जोर किया ॥ ४ ॥

॥ शब्द २९ ॥

खालिक खूबै खूब ही, मोहिँ मिलन दुहेला[2]।
महरम कोई ना मिलै, बन फिरूँ अकेला ॥ १ ॥
बिरह दिवाना मैं फिरूँ, दिल में लौ लागी।
मरम न पाया दास ने, तन तपन न भागी ॥ २ ॥
मैं तरसत तोहि दरस को, तुम दरस न दीन्हा।
नैन चहैं दीदार को, भये बहुत अधीना ॥ ३ ॥
सुरत निरत करि निरखिया, तन मन भये धीरा।
नूर देखि दिलदार का, गुन गावै कबीरा ॥ ४ ॥

(१) बरबाद हुआ। (२) कठिन।

॥ शब्द ३० ॥

प्रेम सखी तुम करो बिचार ।
बहुरि न आना यहि संसार ॥ १ ॥
जो तोहि प्रेम खिलनवा चाव ।
सीस उतारि महल में आव ॥ २ ॥
प्रेम खिलनवा यही सुभाव ।
तू चलि आव कि मोहिं बुलाव ॥ ३ ॥
प्रेम खिलनवा यही बिसेख[1] ।
मैं तोहि देखूँ तू मोहिँ देख ॥ ४ ॥
खेलत प्रेम बहुत पचि हारी ।
जो खेलिहै सो जग से न्यारी ॥ ५ ॥
दीपक जरै बुझै चहे बाति ।
उतरन न दे प्रेम रस माति ॥ ६ ॥
कहत कबीरा प्रेम समान[2] ।
प्रेम समान[3] और नहिं आन ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

साचा साहिब एक तू, बंदा आसिक तेरा ॥ टेक ॥
निसदिन जप तुझ नाम का, पल बिसरै नाहीं ।
हर दम राख हजूर में, तू साचा साईं ॥ १ ॥
गफलत मेरी मेटि के, मोहिं कर हुसियारा ।
भगति भाव बिस्वास में, देखौं दरस तुम्हारा ॥ २ ॥
सिफत तुम्हारी क्या करौं, तुम गहिर गँभीरा ।
सूरत में मूरत बसै, सोइ निरख कबीरा ॥ ३ ॥

(१) बड़ाई । (२) समाया । (३) बराबर ।

॥ शब्द ३२ ॥

ननदी जाव रे महलिया, आपन बिरना[1] जगाव ॥ टेक ॥
भौजी सोवैं जगाये न जागै, लै न सकै कछु दाव ।
काया गढ़ में निसि अँधियरिया, कौन करै वा को भाव ॥ १ ॥
मन कै अगिन दया कै दीपक, बाती प्रेम जगाव ।
तत्त कै तेल चुवै दीपक में, मदन[2] मसाल जराव ॥ २ ॥
भरम कै ताला लगे मन्दिर में, ज्ञान की कुंजी लगाव ।
कपट किवरिया खोलि के रे, यहि बिधि पिय को जगाव ॥ ३ ॥
ब्रम्हंड पार वह पति सुंदर है, अब से भूलि जिनि जाव ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, फिरि न लगै अस दाव ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

घूँघट का पट खोल रे, तो को पीव मिलैंगे ॥ टेक ॥
घट घट में वहि साईं रमता ।
कटुक[3] बचन मत बोल रे, (तो को पीव) ॥ १ ॥
धन जोबन का गर्ब न कीजै ।
झूठा पँचरँग चोल[4] रे, (तो को पीव) ॥ २ ॥
सुन्न महल में दियना बारि ले ।
आसा से मत डोल रे, (तो को पीव) ॥ ३ ॥
जोग जुगत से रंगमहल में ।
पिय पाये अनमोल रे, (तो को पीव) ॥ ४ ॥
कहै कबीर अनंद भयो है ।
बाजत अनहद ढोल रे, (तो को पीव) ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

सैयाँ बुलावे मैं जैहौं ससुरे ।
जल्दी से महरा डोलिया कस रे ॥ १ ॥

---

(१) भाई । (२) काम । (३) कडुवा । (४) पाँच तत्वों का शरीर ।

नैहर के सइ लोग छुटत रे।
कहा करूँ अब कछु नहिं बस रे ॥ २ ॥

बीरन[1] आवो गरे तोरे लागों।
फेर मिलब ह्वै न जानों कस रे ॥ ३ ॥

चालनहार भई मैं अचानक।
रहौं बाबुल[2] तोरी नगरी सुबस रे ॥ ४ ॥

सात सहेली ता पै अकेली।
संग नहीं कोउ एक न दस रे ॥ ५ ॥

गवना चाला तुराव[3] लगो है।
जो कोउ रोवै वा को न हँस रे ॥ ६ ॥

कहै कबीर सुनो भाई साधो।
सैयाँ के महल में बसहु सुजस रे ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३५ ॥

गुरु दियना बारु रे, यह अंध कूप संसार ॥ टेक ॥
माया के रँग रची सब दुनियाँ, नहिं सूझै परत करतार ॥ १ ॥
पुरुष पुरान बसै घट भीतर, तिनुका ओट पहार ॥ २ ॥
मृग के नाभि बसत कस्तूरी, सूँघत भ्रमत उजार[4] ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, छूटि जात भ्रम जार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

पायो सतनाम गरे कै हरवा ॥ टेक ॥
साँकर खटोलना रहनि हमारी, दुबरे दुबरे पाँच कहरवा ॥ १ ॥
ताला कुंजी हमें गुरु दीन्ही, जब चाहौं तब खोलौं किवरवा ॥ २ ॥

---

(१) भाई। (२) बाप। (३) पंजाबी बोली में "तुरो" का अर्थ "चलो" है। (४) जंगल में दौड़ता है।

प्रेम प्रीति कै चुनरी हमरी, जब चाहैं तब नाचैं सहरवा ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बहुरि न ऐबै एहि नगरवा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३७ ॥

भजन में होत अनंद अनंद ।
बरसत बिसद[1] अमी के बादर, भींजत है कोइ संत ॥ १ ॥
अगर बास जहँ तत की नदिया, मानो धारा गङ्ग ।
करि असनान मगन होइ बैठी, चढ़त सबद कै रंग ॥ २ ॥
रोम रोम जा के अमृत भीना, पारस परसत अंग ।
सबद गह्यो जिव संसय नाहीं, साहिब भये तेरे संग ॥ ३ ॥
सोई सार रच्यो मेरे साहिब, जहँ नहिं माया अहं ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जपो सोहं सोहं ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३८ ॥

नाम अमल उतरै न भाई ॥ टेक ॥
और अमल छिन छिन चढ़ि उतरै,
नाम अमल दिन बढ़ै सवाई ॥ १ ॥
देखत चढ़ै सुनत हिये लागै,
सुरत किये तन देत घुमाई ॥ २ ॥
पियत पियाला भये मतवाला,
पायो नाम मिटी दुचिताइ ॥ ३ ॥
जो जन नाम अमल रस चाखा,
तर गइ गनिका सदन कसाई ॥ ४ ॥
कहै कबीर गूँगे गुड़ खाया,
बिन रसना[2] क्या करै बड़ाई ॥ ५ ॥

---

(१) निर्मल । (२) जबान ।

होली

॥ शब्द १ ॥

मैं तो वा दिन फाग मचैहौं, जा दिन पिय मोरे द्वारे ऐहैं ॥टेक॥
रंग वही रँगरेजवा वाही, सुरँग चुनरिया रँगैहौं ॥ १ ॥
जोगिनि होइ के बन बन ढूँढ़ौं, वाही नगर में रहिहौं ॥ २ ॥
बालपने गल सेल्ही बनैहौं, अंग भभूत लगैहौं ॥ ३ ॥
कहै कबीर पिय द्वारे ऐहैं, केसर माथ रँगैहौं ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

ये अँखियाँ अलसानी हो, पिय सेज चलो ॥ टेक ॥
खंभ पकरि पतंग अस डोलै, बोलै मधुरी बानी ॥ १ ॥
फूलन सेज बिछाइ जो राख्यौ, पिया बिना कुम्हिलानी ॥ २ ॥
धीरे पाँव धरौ पलँगा पर, जागत ननद जिठानी ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, लोक लाज बिलछानी[1] ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

होरी खेलत फाग बसंत, सतसँग होइ रहु जोधा ॥
तन मन भेंटि मिलौ जिव साचे, अंतर बिछोह न राखौ ।
मगन होइ सेवा में सन्मुख, मधुर बचन सत भाखौ ॥ १ ॥
होइ दयाल संत घर आवैं, चरनामृत करि पावौ ।
महा प्रसाद सीत मुख लेवौ, या बिधि जनम सुधारौ ॥ २ ॥
सील सँतोष सदा सम दिष्टी, रहनि गहनि में पूरा ।
जा के दरस परस भय भाजे, होइ कलेस सब दूरा ॥ ३ ॥
निसि बासर चरचा चित चंदन, आन कथा न सुहावै ।
सीतल सबद लिये पिचुकारी, भरम गुलाल उड़ावै ॥ ४ ॥

---

(१) छोड़ी ।

सबद सरूप अखंडित अविचल, निर्भय बेपरवाई ।
कहै कबीर ताहि पग परसौ, घट घट सब सुखदाई ॥५॥

॥ शब्द ४ ॥

उड़िजा रे कुमतिया काग उड़िजा रे ॥ टेक ॥
तुम्हरो बचन मोहिं नीक न लागै। स्रवन सुनत दुख जागै ॥१॥
कोइल बोल सुहावन लागै। सब सुनि सुनि अनुरागै ॥२॥
हमरे सैयाँ परदेस बसतु हैं। मोर चित चरनन लागै ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो। गुरू मिलैं बड़ भागै ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

आई गवनवाँ की सारी, उमिरि अबहीं मोरी बारी ॥टेक॥
साज समाज पिया लै आये, और कहरिया चारी।
बम्हना बेदरदी अचरा पकरि के, जोरत गँठिया हमारी।
सखी सब पारत गारी ॥ १ ॥
बिधि[1] गति बाम कछु समझ परत ना, बैरी भई महतारी।
रोइ रोइ अँखियाँ मोर पोंछत, घरवाँ से देत निकारी।
भई सब को हम भारी ॥ २ ॥
गवन कराइ पिया लै चाले, इत उत बाट निहारी।
छूटत गाँव नगर से नाता, छूटे महल अटारी
करम गति टरै न टारी ॥ ३ ॥
नदिया किनारे बलम मोर रसिया, दीन्ह घुँघट पट टारी।
थरथराय तन काँपन लागे, काहू न देखि हमारी।
पिया लै आये गोहारी ॥ ४ ॥

---

(१) ब्रह्मा।

चरनामृत परसाद चरन रज, अपने सीस चढ़ाव ।
लोक लाज कुल कान छाड़ि के, निरभय निसान बजाव ॥ ३ ॥
कथा कीरतन मँगल महोछव, कर साधन की भीर ।
कभी न काज बिगरिहै तेरो, सत सत कहत कबीर ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

मन तोहिं नाच नचावै माया ॥ टेक ॥
आसा डोरि लगाइ गले बिच, नट जिमि कपिहि[1] नचाया ।
नाचत सीस फिरै सबही को, नाम सुरत बिसराया ॥ १ ॥
काम हेतु तुम निसि दिन नाचे, का तुम भरम भुलाया ।
नाम हेतु तुम कबहुँ न नाचे, जो सिरजल[2] तोरी काया ॥ २ ॥
ध्रू प्रहलाद अचल भये जा से, राज बिभीखन पाया ।
अजहूँ चेत हेत कर पिउ से, हे रे निलज बेहाया ॥ ३ ॥
सुख सम्पति सब साज बड़ाई, लिखि तेरे साथ पठाया ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, गनिका बिवान चढ़ाया ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

पिय बिन होरी को खेलै, बावरी भइ डोलै ॥ टेक ॥
बाबा हमारे ब्याह रच्यो है, बर बालक हूँ स्यानी ।
सैयाँ हमारे झूलैं पलना, हमहिं झुलावनहारी ॥ १ ॥
नौवा भूले बरिया भूले, भूले पंडित ज्ञानी ।
मातु पिता दोउ अपनि गरज के, हमरो दरद न जानी ॥ २ ॥
अनब्याही मन हौस[3] करतु हैं, ब्याही तौ पछितानी ।
गौने से मौने होइ बैठी, समुझ समुझ मुसकानी ॥ ३ ॥
वै मुसकानी वै हुलसानी, बिचलत ना दोउ नैना ।
दास कबीर कहै सांइ लखि गइ, सखी सहेलि की सैना ॥ ४ ॥

---

(१) बंदर को। (२) पैदा किया। (३) चाव।

॥ शब्द १२ ॥

गगन मँडल अरुझाई, नित फाग मची है ॥ टेक ॥
ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा, सखियाँ लै लै धाई ।
उमँगि उमँगि रँग डारि पिया पर, फगुवा देहु भलाई ॥ १ ॥
गगन मँडल बिच होरी मची है, कोइ गुरु गम तें लखि पाई ।
सबद डोर जहँ अगर ढरतु है, सोभा बरनि न जाई ॥ २ ॥
फगुवा नाम दियो मोहिं सतगुरु, तन की तपन बुझाई ।
कहै कबीर मगन भइ बिरहिनि, आवागवन नसाई ॥ ३ ॥

॥ शब्द १३ ॥

बिरहिनि झकोरा मारी, को बूझै गति न्यारी ॥ टेक ॥
चोवा चन्दन अबिर अरगजा, करनी कै केसर घोरी ।
प्रेम प्रीति के भरि पिचुकारी, रोम रोम रँगी सारी ॥ १ ॥
इँगला पिंगला रास रचो है, सुखमन बाट बहोरी ।
खेलत हैं कोइ संत बिरहिया, जोग जुगति लगी तारी ॥ २ ॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, तुरही तान नफीरी[1] ।
सुरत निरत जहँ नाचन निकसे, बाढ़त रंग अपारी ॥ ३ ॥
फागुन के दिन आनि लगे री, अब कैसे काह करो री ।
दास कबीर आतम परमातम, खेलत बहियाँ मिरोरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

का सँग होरी खेलौं हो, बालम परदेसवा ॥ टेक ॥
आई है अब रितु बसंत की, फूलन लागे टेसुवा ।
बस्त्र रँगीले पहिरन लागे, बिरहिनि ढारत अँसुवा ॥ १ ॥
भरि गये ताल तलैया सागर, बोलन लागे मेघवा[2] ।
उमड़ी नदी नाव कहँ पाओं, केहि बिधि लिखौं सँदेसवा ॥ २ ॥

(१) एक बाजा शहनाई का सा जो मुँह से बजाया जाता है। (२) मेंढक।

जो जो गये बहुरि नहिं आये, कैसन है वह देसवा।
आवत जावत लखै न कोई, येही मोहिं अँदेसवा ॥ ३ ॥
बालापन जोबन दोउ बीते, पाकन लागे केसवा।
कहै कबीर निज नाम सम्हारी, लै सतगुरु उपदेसवा ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

कोइ मो पै रंग न डारो, मैं तो भइ हूँ बौरी ॥ टेक ॥
इक तो बौरी दूजे बिरह की मारी, तीजे नेह लगो री ॥ १ ॥
अपने पिय सँग होरी खेलौं, येही फाग रचो री ॥ २ ॥
पाँच सुहागिनि होरी खेलैं, कुमति सखी से न्यारी ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, आवागवन निवारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १६ ॥

ऐसी खेल ले होरी जोगिया, जा में आवागवन तजि डारी ॥
ज्ञान ध्यान कै अबिर गुलाल लै, सुरति किये पिचुकारी।
भक्ति भभूत ले अँग पर डारो, मृग मुद्रा नृतकारी ॥ १ ॥
सील सँतोष कै पहिरि चोलना, छिमा टोप सिर धारी।
बिरह बैराग कै कानन मुद्रा, अनहद लाओ तारी ॥ २ ॥
प्रीति प्रतीति नारि सँग लैलै, केसर रंग बना री।
ब्रम्ह नगर में होरी खेलो, अलख रंग भरि झारी ॥ ३ ॥
काम क्रोध अरु मोह लोभ कै, कीच दूर तजि डारी।
जनम मरन की दुविधा मेटो, आसा तृस्ना मारी ॥ ४ ॥
निर्गुन सर्गुन एकहि जानो, भरम गुफा मत जा री।
आनँद अनुभव उर में धारो, अनहद मृदँग बजा री ॥ ५ ॥
जल थल जीव औ जन्तु चराचर, एकहि रूप निहारी।
दास कबीर से होरी मचाओ, खेलो जग में धमारी ॥ ६ ॥

॥ शब्द १७ ॥

खेलौ नित मंगल होरी, नित बसंत नित मंगल होरी ॥ टेक ॥
दया धरम की केसर घोरी, प्रेम प्रीति पिचुकारी ।
भाव भक्ति छिड़कै सतगुरु पै, सुफल जनम नर नारी ॥ १ ॥
प्रीति प्रतीति फूल चित चंदन, सुमिरन ध्यान तुम्हारी ।
ज्ञान गुलाल अगर कस्तूरी, उमँग उमँग रँग डारी ॥ २ ॥
चरनामृत परसाद चरन रज, अपने सीस चढ़ाई ।
लोक लाज कुल करम मेटि के, अभय निसान घुमाई ॥ ३ ॥
कथा कीरतन नाम गुन गावै, करि साधन की भीर ।
कौन काज बिगर्‌यो है तेरो, यों कथि कहत कबीर ॥ ४ ॥

॥ शब्द १८ ॥

कोइ है रे हमारे गाँव को, जा से परचा पूछौं ठाँव को ॥ टेक ॥
बिन बादर बरखै अखंड धार, बिन बिजुरी चमकै अति अपार ॥१॥
ससि भानु बिना जहँ ह्वै प्रकास, गुरू सबद तहँ कियो निवास ॥२॥
बृच्छ एक तहँ अति अनूप, साखा पत्र न छाँह धूप ॥३॥
बिन फूलन भँवरा करि गुँजार, फल लागे तहँ निराधार ॥४॥
ऊँच नीच नहिं जाति पाँति, त्रिगुन न ब्यापै सदा सांति ॥५॥
हर्ष सोग नहिं राग दोष, जरा मरन नहिं बँध मोष ॥६॥
अखँडपुरी इक नग्र नाम, जहँ बसैं साध जन सहज धाम ॥७॥
मरै न जीवै आवै न जाय, जन कबीर गुरु मिले धाय ॥८॥

॥ शब्द १९ ॥

मानुष तन पायो बड़े भाग, अब बिचारि के खेलो फाग ॥टेक॥
बिन जिभ्या गावै गुन रसाल, बिन चरनन चालै अधर चाल । १॥
बिन कर बाजा बजै बैन, निरखि देखि जहँ बिना नैन ॥२॥

होरी आवै फिरि फिरि जावै, यह तन बहुरि न पावै ।
पूर्न प्रताप दया सतगुरु की, आवागवन नसावै,
बात यह कठिन करारी ॥ ४ ॥
सबै संग मिलि होरी खेलैं, गगन में फाग रचा री ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बेद न पावैं पारी ।
सेस की रसना[1] हारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

जहँ बारह मास बसंत होय, परमारथ बूझै साध कोय ।। टेक ॥
बिन फूलन फूल्यो अकास, ब्रह्मादिक सिव लियो निवास ॥ १ ॥
सनकादिक रहैं भँवर होइ, लख चौरासी जीव सोइ ॥ २ ॥
सातो सागर पिये हैं घोर, आन जुरे तेंतिस करोर ॥ ३ ॥
अमर लोक फल लियो है जाय, कहै कबीर जाने सो खाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २५ ॥

सत साहिब खेलैं ऋतु बसंत। कोटि दास सुर मुनि अनंत ॥टेक॥
हँसैं हंस जगमगैं दंत। सेत पुहुप बरखैं अनंत ॥ १ ॥
अग्र सबद की बास माहिं। निरखि हंस सबदै समाहिं ॥ २ ॥
नौ खेलैं तेंतीस तीन। लोक बेद बिष संग लीन ॥ ३ ॥
खेलैं प्रकृति पचीस संग। न्यारा न्यारा धरैं रंग ॥ ४ ॥
सब नर खेलैं गुनन माहिँ। अधर बस्तु कोउ लखै नाहिं ॥ ५ ॥
जुगल जोरि दोउ रहै साध। जुग जुग लिख जो दीन्ह हाथ ॥ ६ ॥
वाकी निकसै पकरि लेइ। बहुरि बहुरि जम त्रास देइ ॥ ७ ॥
कहै कबीर नर अजहुँ चेत। छाड़ खेल धर सबद हेत ॥ ८ ॥

---

(१) जीभ।

॥ शब्द २६ ॥

सखि आज हमारे गृह बसंत ।
सुख उपज्यौ अब मिले कंत ॥ टेक ॥

पिया मिले मन भयो अनंद, दूरि गये सब दोष दुंद ।
अब नहिं ब्यापै संस[1] सोग, पल पल दरसन सरस भोग ॥१॥
जहँ बिन कर बाजे बजैँ बैन, निरखि देख तहँ बिना नैन ।
धुनि सुन थाक्यो चपल चित्त, पल न बिसारौं देखौं नित्त ॥२॥
जहँ दीपक जेहि[2] बरै आगि, सिव सनकादिक रहैं लागि ।
कहै कबीर जहँ गुरु प्रताप, तहँ तो नाहीं पुन्न पाप ॥३॥

॥ शब्द २७ ॥

तुम घट बसंत खेलो सुजान । सत्त सबद में धरो ध्यान ॥टेक॥
एक ब्रम्ह फल लगे दोय । सुबुधि कुबुधि लखि लेहु सोय ॥१॥
बिष फल खावै सब संसार । अमृत फल साधु करै अहार ॥२॥
पाँच पचीस जहँ फूले फूल । भर्म भँवर डरि रहे भूल ॥३॥
काम क्रोध दोउ लागे पात । नर पसु खाहिं कोइ ना अघात ॥४॥
जहँ नौ द्वारे औ दस जुवार[3] । तहँ सींचनहारा है मुरार ॥५॥
मेरे मुक्ति बाग में सुख निधान[4] । देखै सो पावै अयन[5] जान ॥६॥
संत चरन जो रहै लाग । वह देखै अपनो मुक्ति बाग ॥७॥
कहै कबीर सुख भयो भोग । एक नाम बिन सकल रोग ॥८॥

॥ शब्द २८ ॥

चाचरि खेलो हो, समझि मन चाचरि खेलो ॥ टेक ॥
चाचरि खेलो संत मिलि, चित चरन लगाई ।
सतसंगत सत भाव करि, सुख मंगल गाई ॥ १ ॥

---

(१) संसय । (२) जैसे । (३) वैल । (४) भंडार । (५) घर ।

होरी आवै फिरि फिरि जावै, यह तन बहुरि न पावै।
पूर्न प्रताप दया सतगुरु की, आवागवन नसावै,
बात यह कठिन करारी ॥ ४ ॥
सबै संग मिलि होरी खेलैं, गगन में फाग रचा री।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बेद न पावै पारी।
सेस की रसना[1] हारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २४ ॥

जहँ बारह मास बसंत होय, परमारथ बूझै साध कोय ॥ टेक ॥
बिन फूलन फूल्यो अकास, ब्रह्मादिक सिव लियो निवास ॥ १ ॥
सनकादिक रहैं भँवर होइ, लख चौरासी जीव सोइ ॥ २ ॥
सातो सागर पिये हैं घोर, आन जुरे तेंतिस करोर ॥ ३ ॥
अमर लोक फल लियो है जाय, कहै कबीर जाने सो खाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २५ ॥

सत साहिब खेलैं ऋतु बसंत। कोटि दास सुर मुनि अनंत ॥टेक॥
हँसैं हंस जगमगैं दंत। सेत पुहुप बरखैं अनंत ॥ १ ॥
अग्र सबद की बास माहिं। निरखि हंस सबदै समाहिं ॥ २ ॥
नौ खेलैं तेंतीस तीन। लोक बेद बिष संग लीन ॥ ३ ॥
खेलैं प्रकृति पचीस संग। न्यारा न्यारा धरैं रंग ॥ ४ ॥
सब नर खेलैं गुनन माहिँ। अधर बस्तु कोउ लखै नाहिं ॥ ५ ॥
जुगल जोरि दोउ रहै साध। जुग जुग लिख जो दीन्ह हाथ ॥ ६ ॥
वाकी निकसै पकरि लेइ। बहुरि बहुरि जम त्रास देइ ॥ ७ ॥
कहै कबीर नर अजहुँ चेत। छाड़ खेल धर सबद हेत ॥ ८ ॥

---

(१) जीभ।

॥ शब्द २६ ॥

सखि आज हमारे गृह बसंत ।
सुख उपज्यौ अब मिले कंत ॥ टेक ॥
पिया मिले मन भयो अनंद, दूरि गये सब दोष दुंद ।
अब नहिं ब्यापै संस[1] सोग, पल पल दरसन सरस भोग ॥१॥
जहँ बिन कर बाजे बजैं बैन, निरखि देख तहँ बिना नैन ।
धुनि सुन थाक्यो चपल चित्त, पल न बिसारौं देखौं नित्त ॥२॥
जहँ दीपक जेहि[2] बरै आगि, सिव सनकादिक रहैं लागि ।
कहै कबीर जहँ गुरु प्रताप, तहँ तो नाहीं पुन्न पाप ॥३॥

॥ शब्द २७ ॥

तुम घट बसंत खेलो सुजान । सत्त सबद में धरो ध्यान ॥टेक॥
एक ब्रम्ह फल लगे दोय । सुबुधि कुबुधि लखि लेहु सोय ॥१॥
बिष फल खावै सब संसार । अमृत फल साधु करै अहार ॥२॥
पाँच पचीस जहँ फूले फूल । भर्म भँवर डरि रहे भूल ॥३॥
काम क्रोध दोउ लागे पात । नर पसु खाहिं कोइ ना अघात ॥४॥
जहँ नौ द्वारे औ दस जुवार[3] । तहँ सींचनहारा है मुरार ॥५॥
मेरे मुक्ति बाग में सुख निधान[4] । देखै सो पावै अयन[5] जान ॥६॥
संत चरन जो रहै लाग । वह देखै अपनो मुक्ति बाग ॥७॥
कहै कबीर सुख भयो भोग । एक नाम बिन सकल रोग ॥८॥

॥ शब्द २८ ॥

चाचरि खेलो हो, समझि मन चाचरि खेलो ॥ टेक ॥
चाचरि खेलो संत मिलि, चित चरन लगाई ।
सतसंगत सत भाव करि, सुख मंगल गाई ॥ १ ॥

(१) संसय । (२) जैसे । (३) वैल । (४) भंडार । (५) घर ।

खेलि न जानै खेलै निसि दिन, सुधि बुधि गई हिराय ।
जिभ्या के लंपट नर भोंदू, मानुष जनम गँवाय ॥ ७ ॥
चीन्हो रे नर प्रानी या को, निसि दिन करत अँदोर[1] ।
होइ साह सब को घर मूसत, तीनि लोक को चोर ॥ ८ ॥
सतगुरु सबद सत्त गहि निज करि, जा तें संसय जाइ ।
आवागवन रहित ह्वै तेरो, कहै कबीर समुझाय ॥ ९ ॥

॥ शब्द ३० ॥

मेरो साहिब आवनहार, होरी में खेलौंगी ॥ टेक ॥
करनी के कलस सँजोय सकल बिधि, प्रीति पावरी डारी ;
चरन पखारि चरनामृत लेहौं, मन को मान उतारी ॥ १ ॥
तन मन धन सब अर्पन करिहौं, बहु बिधि आरत साज ।
प्रेम मगन ह्वै होरी खेलौं, मेटौं कुल की लाज ॥ २ ॥
धोखा धूरि उड़ाइ सरीर तें, ज्ञान गुलाल प्रकास ।
पारस पान लेउँ सतगुरु से, मेटौं दूसर आस ॥ ३ ॥
दया धरम के केसर घोरौं, भाव भगति पिचुकारी ।
सत्त सुकिरत अबीर अरगजा, देहौं पिय पर डारी ॥ ४ ॥
दास कबीर मिले मोहिं सतगुरु, फगुवा दीन्हो नाम ।
आवागवन की मिटी कलपना, पायो आनँद धाम ॥ ५ ॥

मंगल

॥ शब्द १ ॥

अब हम आनँद को घर पाये ।
जब तें दया भई सतगुरु की, अभय निसान उड़ाये ॥ १ ॥
काम क्रोध की गागर फोड़ी, ममता नीर बहाये ।
तजि परपंच बेद बिधि किरिया, चरन कँवल चित लाये ॥ २ ॥
पाँच तत्त कर तन कै गुदरिया, सुरत कै टोप लगाये ।
हद घर छोड़ बेहद घर आसन, गगन मँडल मठ छाये ॥ ३ ॥
चाँद न सूर दिवस ना रजनी, तहाँ जाइ लौ लाये ।
कहै कबीर कोइ पिय की प्यारी, पिया पिया रटि लाये ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

अखंड साहिब का नाम, और सब खंड है ।
खंडित मेरु सुमेरु, खंड ब्रह्मंड है ॥ १ ॥
थिर न रहै धन धाम, सो जीवन धंध है ।
लख चौरासी जीव, पड़े जम फंद है ॥ २ ॥
जा का गुरु से हेत, सोई निर्बन्ध है ।
उन साधन के संग, सदा आनन्द है ॥ ३ ॥
चंचल मन थिर राखु, जबै भल रंग है ।
तेरे निकट उलट भरि पीव, सो अमृत गंग है ॥ ४ ॥
दया भाव चित राखु, भक्ति को अंग है ।
कहै कबीर चित चेत, सो जगत पतंग है ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सुनो सुहागिनि नारि, प्यार पिव से करो ।
ये बेले[1] ब्योहार तिन्हें तुम परिहरो ॥ टेक ॥ १ ॥

---

(१) बायल, बेमतलब ।

दिनाँ चार को रंग, संग नहिँ जायगा।
यह तो रंग पतंग[1], कहाँ ठहरायगा ॥ २ ॥
पाँच चोर बड़ जोर, कुसंगी अति घने।
ये ठगियन जिव संग, मुसत घर निसि दिने ॥ ३ ॥
सोवत जागत रैन, दिवस घर मूसहीं।
ठाढ़े खड़े पुठवार[2], भली बिधि लूटहीं ॥ ४ ॥
इन ठगियन को राव[3], पकड़ि सो लीजिये।
जो कहुँ आवै हाथ, छाड़ि नहिं दीजिये ॥ ५ ॥
चौथे घर इक गाँव, ठाँव पिव को बसै।
बासा दस के मद्ध, पुरुष इक तहँ हँसै ॥ ६ ॥
होत है सिंध घमोर, संख धुनि अति घनी।
तन्ती[4] की झनकार, बजत है झिनझिनी ॥ ७ ॥
महरम होय जो संत, सोई भल जानई।
कहै कबीर समुझाय, सत्त करि मानई ॥ ८ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सुरत सरोवर न्हाइ के मंगल गाइये।
दर्पन सबद निहारि, तिलक सिर लाइये ॥ १ ॥
चल हंसा सतलोक, बहुत सुख पाइये।
परस पुरुष के चरन, बहुरि नहिँ आइये ॥ २ ॥
अमृत भोजन तहाँ, अमी अचवाइये।
मुख में सेत तँबूल, सबद लौ लाइये ॥ ३ ॥
पुहुप अनूपम बास, घर हंस चलीजिये।
अमृत कपड़े ओढ़ि, मुकुट सिर दीजिये ॥ ४ ॥

---

(१) एक लकड़ी जिस से कच्चा लाल रंग निकलता है। (२) ज़बरदस्त। (३) सरदार। (४) सारंगी।

ह घर बहुत अनन्द, हंसा सुख लीजिये।
दन मनोहर गात, निरखि के जीजिये॥ ५॥
ति[1] बिन मसि[1] बिन अंक, सो पुस्तक बाँचिये।
बेन कर ताल बजाय, चरन बिन नाचिये॥ ६॥
बिन दीपक उँजियार, अगम घर देखिये।
खुलि गये सबद किवाड़, पुरुष से भेटिये॥ ७॥
साहिब सन्मुख होइ, भक्ति चित लाइये।
मन मानिक सँग हंस, दरस तहँ पाइये॥ ८॥
कहै कबीर यह मंगल, भागन पाइये।
गुरु संगत लौ लाय, हंसा चलि जाइये॥ ९॥

॥ शब्द ५॥

अगमपुरी को ध्यान, खबर सतगुरु करी।
लीजे तत्त बिचार, सुरत मन में धरी॥ १॥
सुरत निरत दोउ संग, अगम को गम कियो।
सबर बिबेक बिचार, छिमा चित में दियो॥ २॥
गुरु के सबद लौ लाय, अगोचर घर कियो।
सबद उठै झनकार, अलख तहँ लखि लियो॥ ३॥
अलख लखो लौ लाय, डोरि आगे धरो।
अगमगार वह देस, केल हंसा करो॥ ४॥
सतगुरु डोरी लाय, पुकारैं जीव को।
हंसा चले सँभालि, मिलन निज पीव को॥ ५॥
मंगल कहै कबीर, सो गुरमुख पास है।
हंसा आये लोक, अमर घर बास है॥ ६॥

(१) दावात और सियाही।

॥ शब्द ६ ॥

तुम साहिब बहुरंगी, रँग बहुतै किये।
कब के बिछुड़े हंस, बाँहि गहि अब लिये॥ १ ॥
प्रथम पठाये छाप, सुरत से लीजिये।
पाइ परवाना पान, चरन चित दीजिये॥ २ ॥

॥ छंद ॥

पुरब पच्छिम देख दक्खिन, उत्तर रहै ठहराइ के।
जहाँ देखो गम्म गुरु की, तहीं तत्त समाइ के॥ ३ ॥
सुरत उत्तर पास किलकै, पुहुप दीप तें आइके।
लाइ लौ की डोरि बाँधै, संत पकरै जाइके॥ ४ ॥
पकरि चरन कर जोरि, निछावर कीजिये।
तन मन धन औ प्रान, गुरू को दीजिये॥ ५ ॥
तब गुरु होहिं दयाल, दया चित लावई।
गहि हंसा की बाँहि, सु घर पहुँचावई॥ ६ ॥

॥ छद ॥

दया करि जब मुक्ति दीन्हो, गह्यो तत्त बनाइ[1] के।
परम प्रीतम जानि अपने, हृदय लियो समाइ के॥ ७ ॥
जरा मरन को भय नसायो, जबै गुरु दाया करी।
कर्म भर्म को छाड़ि जिय तें, सकल ब्याधा परिहरी॥ ८ ॥
तुम मेरे परम सनेही, हंसा घर चलौ।
छाड़ि बिषय भौसागर, हँस हंसन मिलौ॥ ९ ॥
सूरत निरत बिचार, तत्त पद सार है।
बैठु हंस सत लोक, नाम आधार है॥ १० ॥

---

(१) अच्छी तरह।

॥ छंद ॥

सत्त लोक अमान हंसा, सुखसागर सुख बास है।
सत्त सुकिरत पुरुष राजे, तहाँ नहिं जम त्रास है॥ ११ ॥
अजर अमर जो हंस है, सुनि सत्त सब्द चित लाइ के।
आवागवन से रहित होवे, कहै कबीर समुझाइ के॥ १२ ॥

॥ शब्द ७ ॥

देखि माया को रूप, तिमिर आगे फिरै।
तेरी भक्ति गई बड़ि दूर, जीव कैसे तरै॥ १ ॥
जुन्हरी डार रस होय, तहू गुड़ ना पकै।
कोदक[1] कर्म कमाय, भक्ति बिन ना तरै॥ २ ॥
ईखहि से गुड़ होय, भक्ति से क्रम कटै।
जम को बंद न होय, काल कागद फटै॥ ३ ॥
कहै कबीर बिचारि, बहुरि नहिं आवई।
लोक लाज कुल मेटि, परम पद पावई॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

साध संगत गुरुदेव, उहाँ चलि जाइये।
भाव भक्ति उपदेस, तहाँ तें पाइये॥ १ ॥
अस संगत जरि जाव, न चरचा नाम की।
दूलह बिना बरात, कहो किस काम की॥ २ ॥
दुबिधा को करि दूर, सतगुरू ध्याइये।
आन देव की सेव, न चित्त लगाइये॥ ३ ॥
आन देव की सेव, भली नहिं जीव को।
कहै कबीर बिचारि, न पावे पीव को॥ ४ ॥

---

(१) छोटे, ओछे।

॥ शब्द ९ ॥

दुविधा को करि दूर, धनी को सेव रे।
तेरी भौसागर में नाव, सुरत से खेव रे ॥ १ ॥
सुमिरि सुमिरि गुरु नाम, चिरंजिव जीव रे।
नाम खाँड़ बिन मोल, घोल कर पीव रे ॥ २ ॥
काया में नहिँ नाम, गुरू के हेत का।
नाम बिना बेकाम, मटीला[1] खेत का ॥ ३ ॥
ऊँचे बैठि कचहरी, न्याव चुकावते।
ते माटी मिलि गये, नजर नहिँ आवते ॥ ४ ॥
तू माया धन धाम, देखि मत भूल रे।
दिना चार का रंग, मिलैगा धूल रे ॥ ५ ॥
बार बार नर देह, नहीं यह बीर[2] रे।
चेत सके तो चेत, कहैं कब्बीर रे ॥ ६ ॥

॥ शब्द १० ॥

यह कलि ना कोइ अपनो, का सँग बोलिये रे।
ज्यों मैदानी रूख, अकेला डोलिये रे ॥ १ ॥
माया के मदमाते, सुनैं नहिँ कोई रे।
क्या राजा क्या रंक, बियाकुल दोई रे ॥ २ ॥
माया का बिस्तार, रहै नहिँ कोई रे।
ज्योँ पुरइनि[3] पर नीर, थीर नहिँ होई रे ॥ ३ ॥
विष बोयो संसार, अमृत कस पावै रे।
पुरब जन्म तेरो कीन्ह, दोस कित लावै रे ॥ ४ ॥
मन आवै मन जावै, मनहिँ बटोरो रे।
मन बुड़वै मन तारै, मनहिँ निहोरो[4] रे ॥ ५ ॥

---

(१) ढेला। (२) भाई। (३) कोइं। (४) समझाओ, राज़ी करो।

कहै कबीर यह मंगल, मन समझावो रे।
समझि के कहौं पयाम[1], बहुरि नहिं आवो रे॥ ६॥

॥ शब्द ११॥

करिके कौल करार, आया था भजन को।
अब तू मुरख गँवार, कुंवे लगा परन को॥ १॥
पर्‌यो माया के जाल, रह्यो मन फूलि के।
गर्भ बास की त्रास, रह्यो नर भूलि के॥ २॥
ऊँची अटरिया पौल[2], चढ़ौ चढ़ि गिरि परौ।
सतगुरु बुधि लइ नाहिं, पार कैसे परौ॥ ३॥
सतगुरु होहु दयाल, बाँह मेरी गहौ।
बूड़त लेव उबारि, पार अब के करौ॥ ४॥
दास कबीर सिर नाय, कहै कर जोरि के।
इक साहिब से जोरि, सबन से तोरि के॥ ५॥

॥ शब्द १२॥

आरत कीजे आतम पूजा, सत्त पुरष की और न दूजा॥ १॥
ज्ञान प्रकास दीप उँजियारा, घट घट देखौ प्रान पियारा॥ २॥
भाव भक्ति और नहिं भेवा, दया सरूपी करि ले सेवा॥ ३॥
सत संगत मिलि सबद बिराजे, धोखा दुंद भरम सब भाजे॥ ४॥
काया नगरी देव बहाई, आनँद रूप सकल सुखदाई॥ ५॥
सुन्न ध्यान सब के मन माना, तुम बैठो आतम अस्थाना॥ ६॥
सबद सुरत ले हृदय बसावो, कपट क्रोध को दूरि बहावो॥ ७॥
कहै कबीर निज रहनि सम्हारी, सदा अनन्द रहैं नर नारी॥ ८॥

॥ शब्द १३॥

कहै कबीर सुनो हो साधो, अमृत बचन हमार।
जो भल चाहो आपनो, परखो करो बिचार॥ १॥

(१) संदेश। (२) दर, ज़ीना।

जुगन जुगन सब से कही, काहु न दीन्हो कान ।
सुर नर मुनि मद माते, झूठे भर्म भुलान ॥ २ ॥
बरम्हा भूले परथमे, आद्या[१] का उपदेस ।
करता चीन्हि पर्‌यो नहीं, लायो बिरह बिदेस ॥ ३ ॥
जे करता तेँ ऊपजे, ता से परि गयो बीच ।
अपनी बुद्धि बिबेक बिन, सहज बिसाई[२] मीच ॥ ४ ॥
अपनी फहम[३] रु उक्ति[४] करि, बिबि[५] अच्छर धर्‌यो नाम ।
सबद अनाहद थापिया, सिरजे बेद पुरान ॥ ५ ॥
बेद कथे उन उक्ति तेँ, बिस्नु कथे बहु रूप ।
सहस नाम संकर कथे, जोग जुगत अँध कूप ॥ ६ ॥
इनकी माड़नि मड़ि[६] रही, चहुँ दिसि रोकी बाट ।
फैलि गई सब सृष्टि में, समझ न मेटी फाट[७] ॥ ७ ॥
सनकादिक तप ठानिया, तत्त साधना कीन ।
गगन सुन्न में पैठि के, अनहद धुन लौलीन ॥ ८ ॥
अपनो तत्त जो सोधि के, लीन्हो जोति निकास ।
जोति निरंजन थापिया, भई सबन कि उपास ॥ ९ ॥
यहि में तें सब मत चले, यही चल्यो उपदेस ।
निस्चै गहि निर्भय रहो, सुन परम तत्त संदेस ॥१०॥
सनकादिक मुनि नारदा, ब्यास रु गोरखदत्त ।
यही मते सब भूलि के, भूले कोटि अनन्त ॥११॥
ध्रु प्रहलाद भभीखना, भर्थरि गोपीचंद ।
जहँ लौं भक्त जक्त में, सब उरझे यहि फंद ॥१२॥

(१) योग माया। (२) मोल ली। (३) समझ। (४) युक्ति। (५) दो। (६) दाँय चल रही है। (७) फाही, जाल।

या फन्दा तें निकसहू, मानो बचन हमार।
उलटि अपनपौ चीन्हहू, देखहु नजरि पसार ॥ १३ ॥
केहि गावो केहि ध्यावहू, छोड़हु सकल धमार[1]।
हम हिरदे सब के बसे, कस सेवो सून उजाड़ ॥ १४ ॥
दूरहि करता थापि के, करी दूर की मान।
जो करता दूरे हुते, तौ को जग सिरजे आन ॥ १५ ॥
जो जानो यहँ है नहीं, तौ तुम धावो दूर।
दूरि के ढोल सुहावने, निस्फल मरो बिसूर[2] ॥ १६ ॥
दुर्लभ दरसन दूर के, नियरे सद सुख बास।
कहै कबीर मोहिं व्यापिया, मत दुख पावे दास ॥ १७ ॥
आप अपनपौ चीन्हहू, नखसिख सहित कबीर।
आनँद मंगल गावहू, होहि अपनपौ थीर ॥ १८ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सतगुरु सबद कमान, सुरत गाँसी भई।
मारत हियरे बान, पीर भारी भई ॥ १ ॥
निसि दिन सालै घाव, नींद आवै नहीं।
पिया मिलन की आस, नैहर भावै नहीं ॥ २ ॥
चढ़ि गैलूँ गगन अटारी, तो दीपक बारि के।
होइ गैलै पुरुष से भेट, तो तन मन हारि के ॥ ३ ॥
कागा बोली बोल, कहाँ लगि भाखिये।
कहै कबीर धर्मदास, तीन गुन त्यागिये ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

बंदी छोर कबीर, भक्ति मोहिं दीजिये।
बाँहि गहे की लाज, गहर[3] मत कीजिये ॥ १ ॥

(१) नाच, दौड़ धूप। (२) सिसक कर रोना। (३) देर।

कागा बरन छुड़ाइ, हंस बुधि लाइये ।
पूरन पद को देव, महा सुख पाइये ॥ २ ॥
जो तुम सरनै आयौं, बचन इक मानिये ।
भौसागर बहै ज़ोर, सुरत निज राखिये ॥ ३ ॥
दसो द्वार बेकार, नवो नाटिका[१] बहै ।
सुरत नहीं ठहराय, लगन कैसे लगै ॥ ४ ॥
जैसे मीन सनेह, सदा जल में रहै ।
जल बिन त्यागै, प्रान लगन ऐसी लगै ॥ ५ ॥
मेटौ सकल बिकार, भार सिर लेइयो ।
तुमहिं में रहौं समाइ, आपन करि लेइयो ॥ ६ ॥
कहै कबीर बिचारि, सोई टकसार है ।
हंस चले सतलोक, तो नाम अधार है ॥ ७ ॥

मिश्रित

॥ शब्द १ ॥

समुझि बूझि के देखो गुइयाँ, भीतर यह क्या बोले है ॥ १ ॥
बलि बलि जाउँ आपने गुरु की, जिन यह भेद को खोले है ॥ २ ॥
आदम में वह आप समाया, जो सब रँग में घोले है ॥ ३ ॥
कहत कबीर जगे का सुपना, कहि न सकै वह बोले[२] है ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

हम ऐसा देखा सतगुरु संत सिपाही ॥ टेक ॥
सत्त नाम को पटा लिखायो, सतगुरु आज्ञा पाई ।
चौरासी के दुक्ख मिटे, अनुभौ जागीरी पाई ॥ १ ॥
सुरत सींगरा[३] साँग[४] समुझ को, तन की तुपक बनाई ।
दम को दारू सहज को सीसा, ज्ञान के गज ठहकाई ॥ २ ॥

---

(१) नाड़ी । (२) शब्द, वचन । (३) सींघ की सूरत की एक चीज़ बारूद रखने की ।
(४) [illegible] ।

सील सँतोष प्रेम की पथरी, चित चकमक चमकाई ।
जोग को जामा बुद्धि मुद्रिका, प्रीति पियाला पाई ॥ ३ ॥
सत के सेल्ह[1] जुगत के जमधर[2], छिमा ढाल ठनकाई ।
मोह मोरचा पहिले मार्यो, दुबिधा मारि हटाई ॥ ४ ॥
सत्त नाम के लगा पलीता, हरहर होत हवाई ।
गम गोला गढ़ भीतर मार्यो, भरम के बुर्ज ढहाई ॥ ५ ॥
सुरत निरत के घेरा दीन्हो, बंद कियो दरवाजा ।
सबद सूरमा भीतर पैठा, पकरि लियो मन राजा ॥ ६ ॥
पाँचो पकरे कामदार जो, पकरी ममता माई ।
दास कबीर चढ़्यो गढ़ ऊपर, अभय निसान बजाई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ३ ॥

दिन राते गावो मोरी सजनी, सतगुरु को सिर नाइ हो ।
फिर पाछे पछितैहो सजनी, जब जम पकरै आइ हो ॥ १ ॥
सुख सागर में परो हो सजनी, दुख को देहु बहाइ हो ।
भक्ति घाँघरा पहिरो सजनी, रैन दिवस गुन गाइ हो ॥ २ ॥
निरभय अँगिया कसि लेउ सजनी, भयहिं भगावो दूरि हो ।
प्रीति लगी साहिब सँग सजनी, डारि जगत पर धूरि हो ॥ ३ ॥
प्रेम चुनरिया ओढ़ो सजनी, सतगुरु दीन्ह रँगाइ हो ।
जित देखौं तित साहिब सजनी, नैनन रह्यो समाइ हो ॥ ४ ॥
फहम[3] फुलेल बनाइ के सजनी, सिर में दीन्हो डारि हो ।
ज्ञान की कँगही लैके सजनी, कर्म केस निरवारु[4] हो ॥ ५ ॥
समुझ की पटिया पारो सजनी, चुटिया गुहो सम्हारि हो ।
संतोष सहेलरि गुहि ले आई, झबिया सहज अपार हो ॥ ६ ॥
दया भाव की टिकुली सजनी, बिरह बीज अनुसार हो ।
जा को दया न आवै सजनी, परै चौरासी धार हो ॥ ७ ॥

---

(१) बरछी । (२) कटार । (३) समझ बूझ । (४) सुलझाओ ।

सील कै सेंदुर माँग भरु सजनी, सोभा अगम अपार हो ।
धीरज अंजन आँजी सजनी, छिमा की बेंदी लिलार[1] हो ॥ ८ ॥
बेसर बनी बुद्धि की सजनी, मोती बचन सुधार हो ।
दीन गरीबी रहो गुरन से, सोई गले के हार हो ॥ ९ ॥
बाजूबन्द बिबेक के सजनी, बहुँटा ब्रम्ह बिचारि हो ।
चाल की चुरियाँ पहिरो सजनी, परख पटीला डारि हो ॥१०॥
नेह निगरही दुहरी सजनी, ककना अकिल के ढारि हो ।
मन की मुँदरी पहिरो सजनी, नाम नगीना सार हो ॥११॥
नाम जपो निसि बासर सजनी, काटै जम के फाँसि हो ।
पहिरो चोप चुनरिया सजनी, चित मत करहु उदास हो ॥१२॥
सत सुकिरत दोउ नूपुर सजनी, उठै सबद झनकार हो ।
पहिरि पचीसो बिछिया सजनी, धरि ल्यो पाँव सम्हार हो ॥१३॥
तीनोँ गुन के अनवट सजनी, गुरु से ल्यो बदलाइ हो ।
काम क्रोध दोउ सम करि सजनी, अमर लोक कौ जाइ हो ॥१४॥
घर जो बाड़ा कुमति को सजनी, सहर से देव बहाइ हो ।
पिया जो सोवै महल में सजनी, उन को लेव जगाइ हो ॥१५॥
येहि बिधि सुन्दर साजि के सजनी, करि ल्यो सोरहो सिंगार हो ।
पाँच सहेलरि सँग ल्यो सजनी, गावो मंगलचार हो ॥१६॥
पिय मोर सोवै महल में सजनी, अगम अगोचर पार हो ।
अकिल आरसी लैकै सजनी, पिय को रूप निहार हो ॥ १७॥
घूँघट खोलि कपट कौ सजनी, हेरो गरुन की ओरि हो ।
पान लेहु मुक्ती को सजनी, जम से तिनुका तोरि हो ॥१८॥
बिन सतगुरु चरचा के सजनी, सो पुनि बड़े लबार हो ।
बिना पुरुष की तिरिया सजनी, उन को झूठ सिंगार हो ॥१९॥
सो दिन जिन जानो मोरि सजनी, जो गावै संसार हो ।
यह तो दिन मुक्ती कै सजनी, साधो लेहु बिचार हो ॥२०॥

---

(१) माथे ।

दास कबीर की बिनती सजनी, सुन लेहु संत सुजान हो ।
आवागवन न होइहै सजनी, पावो पद निर्बान हो ॥ २१ ॥

॥ शब्द ४ ॥

अब कोइ खेतिया मन लावै ॥ टेक ॥
ज्ञान कुदार ले बंजर गोड़ै, नाम को बीज बोवावै ।
सुरत सरावन[1] नय कर फेरै, ढेला रहन न पावै ॥ १ ॥
मनसा खुरपी खेत निरावै, दूब बचन नहिं पावै ।
कोस पचीस इक बथुवा नीचे, जड़ से खोदि बहावै ॥ २ ॥
काम क्रोध के बैल बने हैं, खेत चरन को आवैं ।
सुरत लकुटिया ले फटकारै, भागत राह न पावैं ॥ ३ ॥
उलटि पलटि के खेत को जोतै, पूर किसान कहावै ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जब वा घर को पावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

अस कोइ मन हिं लोह सम[2] तावै ॥ टेक ॥
करम जारि के कोइला करि दे, ब्रम्ह अगिन परचावै ।
ताय तूय के निर्मल करि ले, सील के नीर बुझावै ॥ १ ॥
इतनो जोरि जुगत करि लावै, लगन लुहार कहावै ।
ज्ञान बिबेक जतन से करि ले, जा बिधि अजर झरावै ॥ २ ॥
सुरत निरत की सँड़सी करि ले, जुगत निहाई जमावै ।
नाम हथौड़ा दृढ़ करि मारै, करम की रेख मिटावै ॥ ३ ॥
पाँच आतमा दृढ़ करि राखै, यों करि मन समुझावै ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, भूला अर्थ लगावै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

साधो यह मन है बड़ जालिम ।
जा को मन से काम परो है, तिसही ह्वैहै मालुम ॥ १ ॥
मन कारन जो उनको छाया, तेहि छाया में अटके ।
निरगुन सरगुन मन की बाजी, खरे सयाने भटके ॥ २ ॥

---

(१) हेंगा, पटरा । (२) लोहा के सदृश ।

मन ही चौदह लोक बनाया, पाँच तत्त गुन कीन्हे।
तीन लोक जीवन बस कीन्हे, परै न काहू चीन्हे ॥ ३ ॥
जो कोउ कहै हम मन को मारा, जा के रूप न रेखा।
छिन छिन में कितनौं रँग ल्यावै, जे सपनेहु नहिं देखा ॥ ४ ॥
रसातल इकइस ब्रम्हंडा, सब पर अदल चलावै।
षट रस में भोगी मन राजा, सो कैसे कै पावै ॥ ५ ॥
सब के ऊपर नाम निहच्छर, तहँ लै मन को राखै।
तब मन की गति जान परै यह, सत कबीर मुख भाखै ॥ ६ ॥

॥ शब्द ७ ॥

यह मन जालिम जोर री, बरजे नहिं मानै ॥ टेक ॥
जो कोइ मन को पकरा चाहै, भागत साँकर तोर ॥ १ ॥
सुर नर मुनि सब पचि पचि हारे, हाथ न आवै चोर ॥ २ ॥
जो हंसा सतगुरु कै होई, राखै ममता छोर ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बचो गुरुन की ओट ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

वाह वाह सरनागति ता की है ॥ टेक ॥
बोल अबोल अडोल अचाहक, ऐसी गतिया जा की है ॥ १ ॥
अंतरगति में भया उजाला, बिन दीपक बिन बाती है ॥ २ ॥
सुरत सुहागिनि भइ मतवारी, प्रेम सुधा रस चाखी है ॥ ३ ॥
निरखि निरखि अंतर पग धरना, अजब झरोखे झाँकी है ॥ ४ ॥
कहै कबीर इक नाम सुमिरि ले, आदि अंत जो साखी है ॥ ५ ॥

॥ शब्द ९ ॥

वाह वाह अमर घर पाया है ॥ टेक ॥
दुक्ख दर्द काल नहिं व्यापै, आनँद मंगल गाया है ॥ १ ॥
मूल बीज बिन बिर्छ बिराजे, सतगुरु अलख लखाया है ॥ २ ॥
कोटि भानु छवि भया उजारा, हंस हिरम्बर भाया है ॥ ३ ॥
कबीर सुनो भाई साधो, आवा गवन मिटाया है ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

ना मैं धर्मी नाहिं अधर्मी, ना मैं जती न कामी हो ।
ना मैं कहता ना मैं सुनता, ना मैं सेवक स्वामी हो ॥ १ ॥
ना मैं बंधा ना मैं मुक्ता, ना निर्बंध सरबंगी हो ।
ना काहू से न्यारा हूआ, ना काहू को संगी हो ॥ २ ॥
ना हम नरक लोक को जाते, ना हम सुरग सिधारे हो ।
सबही कर्म हमारा कीया, हम कर्मन तें न्यारे हो ॥ ३ ॥
या मत को कोइ बिरला बूझै, सो सतगुरु हो बैठे हो ।
मत कबीर काहू को थापे, मत काहू को मेटे हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

हीरा वहाँ भँजैये, जहँ कोइ रतन पारखी पैये ॥ टेक ॥
बस्तु हमारी अगम अगोचर, जाइ सराफा लैये ।
जहाँ जाइ जम हाथ पसारै, तहँ तुम बस्तु छिपैये ॥ १ ॥
मूल के डाँड़ी तत्त कै पलरा, ज्ञान कै डोर लगैये ।
मासा पाँच पचीस रती के, तोला तीन तुलैये ॥ २ ॥
तोल ताल के जमा सुलाखा, तब वा के घर जैये ।
जौहरि नाम अनादी के रे, तहँ तुम बस्तु दिखैये ॥ ३ ॥
चलत फिरत में बहुतक ठग हैं, तिन को नहिं दिखलैये ।
कहै कबीर भाव कै सौदा, पूरी गाँठि लगैये ॥ ४ ॥

॥ शब्द १२ ॥

अपनपौ आपुहि तेँ बिसरो ॥ टेक ॥
जैसे स्वान[1] काच मंदिर में भ्रम से भूँकि मरो ॥ १ ॥
ज्यों केहरि[2] बपु[3] निरख कूप[4] जल प्रतिमा[5] देखि गिरो ॥ २ ॥
वैसे ही गज[6] फटिक[7] सिला[8] में, दसनन[9] आनि अड़ो ॥ ३ ॥
मरकट[10] मूठि[11] स्वाद नहिं बहुरै, घर घर रटत फिरो ॥ ४ ॥
कह कबीर नलनी[12] के सुगना[13] तोहि कवन पकरो ॥ ५ ॥

---

(१) कुत्ता । (२) बाघ । (३) शरीर । (४) कुवाँ । (५) छाया । (६) हाथी । (७) बिल्लौर । (८) चट्टान । (९) दाँत । (१०) बंदर । (११) मुट्ठी । (१२) नली जिससे तोता फसाया जाता है । (१३) तोता ।

॥ शब्द १३ ॥

हरि दरजी का मरम न पाया, जिन यह चोला अजब बनाया ॥१॥
पानी की सुई पवन के धागा, आठ मास दस सीवत लागा ॥२॥
पाँच तत्त के गुदरी बनाई, चाँद सुरज दुइ थेगली[1] लगाई ॥३॥
जतन जतन करि मुकट बनाया, ता बिच हीरा लाल जड़ाया ॥४॥
आपहि सीवे आप बनावे, प्रान पुरुष को ले पहिरावे ॥५॥
कहै कबीर सोई जन मेरा, या चोले का करै निबेरा ॥६॥

॥ शब्द १४ ॥

हरि ठग जगत ठगौरी लाई ।
हरि के बियोगी कस जीवैं भाई ॥ १ ॥
को का को पुरुष कौन का की नारी ।
अकथ कथा जम दुष्ट पसारी ॥ २ ॥
को का को पुत्र कौन का को बापा ।
को रे मरै को सहै संतापा ॥ ३ ॥
ठगि ठगि मूल[2] सबन को लीन्हा ।
राम ठगौरी काहु न चीन्हा ॥ ४ ॥
कहै कबीर ठग से मन माना ।
गई ठगौरी जब ठग पहिचाना ॥ ५ ॥

॥ शब्द १५ ॥

जोगवै निस बासर जोग जती ॥ टेक ॥
जैसे सोना जोगवत सोनरा, जाने देत न एक रती ॥ १ ॥
जैसे कृपिन कनी को जोगवै, क्या राजा क्या छत्रपती ॥ २ ॥
जैसे ब्रम्हा बिस्नुहिं जोगवत, सिव को जोगवत पारबती ॥ ३ ॥
जैसे नारि पुरुष को जोगवत, जरति पिया सँग होत सती ॥ ४ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, कोइ कोइ बचि गये सूर सती ॥ ५ ॥

---

(१) पैवँद । (२) जमा ।

॥ शब्द १६ ॥

डुगडुगी सहर में बाजी हो ॥ टेक ॥

आदि साहिब अदली आये, पकरे पंडित काजी हो ॥ १ ॥
कोतवालन के गुरुआ पकरे, पाँच पचीस समाजी हो ॥ २ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, रैयत होगई राजी हो ॥ ३ ॥

॥ शब्द १७ ॥

रिमझिम बरसै बूँद सुरतिया ।
का से कहौं दिल आपन बतिया ॥ १ ॥
अब सुन सजनी सरोवर गैलै ।
सुखाइ कँवल कुम्हिलाइ गैलै ॥ २ ॥
औघट घटिया लगलि मोरी नैया ।
ताहि पै चढ़लैं पाँचो भैया ॥ ३ ॥
अब सुन सजनी भैलै मतवार ।
कस जाइब औघट के पार ॥ ४ ॥
चाँद सुरज तुम मोरे साथी ।
सैयाँ दरबरवा हमार पत राखी ॥ ५ ॥
दास कबीर गावै निरगुन ज्ञनियाँ ।
समुझि बिचारि जिय लेइ सरनियाँ ॥ ६ ॥

॥ शब्द १८ ॥

कँवल से भँवरा बिछुड़ल हो, जहँ कोइ न हमार ॥ १ ॥
भौजल नदिया भयावन हो, बिन जल कै धार ॥ २ ॥
ना देखूँ नाव न बेड़ा हो, कैसे उतरब पार ॥ ३ ॥
सत्त की नैया सिर्जावल हो, सुकिरत करि यार ॥ ४ ॥
गुरु के सबद की नहरिया हो, खेइ उतरब पार ॥ ५ ॥
दास कबीर निरगुन गावल हो, संत लेहु बिचार ॥ ६ ॥

॥ शब्द १९ ॥

आऊँगा न जाऊँगा मरूँगा न जीऊँगा ।
गुरु के साथ अमी रस पिऊँगा ॥ १ ॥

कोई फेरै माला कोई फेरै तसबी ।
देखो रे लोगो दोनों कसबी ॥ २ ॥
कोई जावै मक्के कोई जावै कासी ।
दोऊ के गल बिच परि गइ फाँसी ॥ ३ ॥
कोइ पूजे मढ़ियाँ कोइ पूजै गोराँ[1] ।
दोऊ की मतियाँ हरि लई चोराँ ॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो नर लोई ।
हम न किसी के न हमरा कोई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २० ॥

चली चल मग में का भरमावै ॥ टेक ॥
नई बहुरिया गौने आई, लहबर लहबर[2] होय ।
इन बातन में नफा नहीं है, सूधी सड़क टटोय[3] ॥ १ ॥
तोहुँ बहुरिया अजहुँ न मानै, डारयो खलक बिलोय ।
पिया मिले पीहर को रोवै, लाज न आवै तोहि ॥ २ ॥
सृंगी ऋषि तो बन के बासी, वो भी डारे खोय ।
नैन मारि पलकों में राखे, पल में डारे बिगोय ॥ ३ ॥
सोहं नारी अधिक दुलारी, पिय की प्यारी होय ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जबरदस्त की जोय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २१ ॥

ज्ञान आरती इमरित बानी, पूरन ब्रम्ह लेव पहिचानी ॥
जिनके हुकुम पवन अरु पानी, तिनकी गति कोइ बिलें जानी ॥
तिरदेवा मिलि जोति बखानी, निरंकार की अकथ कहानी ॥
दृष्टि बिना दुनिया बौरानी, भरम भरम भटकै नर खानी ॥
जो आसा सब हिलिमिलि ठानी, साहिब छाड़ि जम हाथ बिकानी ॥
गगन वाव गरजे असमाना, निःचै धुजा पुरुष फहराना ॥
कहै कबीर सोइ संत सियाना, जिन जिन सबद गुरुन कै माना ॥

(१) क़बर । (२) पोशाक—भाव कपड़े की सम्हाल न हो सकने से लबर झबर है । (३) टटोल, ढूँढ़ ।

॥ शब्द २२ ॥

हीरा नाम अमोल है, रहै घट घट थीरा।
सिद्धी आसन सोधि के, बैठै वहि तीरा ॥ १ ॥
गंग जमुन के रेत पर, बहै झिरि झिरि नीरा।
पुरब सोधि पच्छिम गये, करिके मन धीरा ॥ २ ॥
बिरहिनि बाजे बाँसुरी, सुनि गइ मोर पीरा।
आठ पहर बाजत रहै, अस गहिर गँभीरा ॥ ३ ॥
हीरा झलकै द्वार पर, परखै जोइ सूरा।
कहै कबीर गुरु गम्म से, पहुँचै कोइ पूरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

जग में सोइ बैराग कहावै ॥ टेक ॥
आसन मारि गगन में बैठै, दुर्मति दूर बहावै ॥ १ ॥
भूख प्यास औ निद्रा साधै, जियते तनहिं जरावै ॥ २ ॥
भौसागर के भरम मिटावै, चौरासी जिति[1] आवै ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, भाव भक्ति मन लावै ॥ ४ ॥

निरख प्रबोध की रमैनी

(१)

अस सतगुरु बोले सत बानी। धन धन सत्त नाम जिन जानी ॥
नाम प्रतीति भई सब संता। एक जानि के मिटे अनंता ॥
अनँत नाम जब एक समाना। तब ही साध परम पद जाना ॥
बिरला संत परम गति जानै। एक अनंत सो कहा बखानै ॥
सब तें न्यारा सब के माहीं। माँझी सतगुरु दूजा नाहीं ॥
सत्तनाम जा के धन होई। धन जीवन ताही को सोई ॥

॥ दोहा ॥

जिनके धन सतनाम है, तिन का जीवन धन्न।
तिन को सतगुरु तारहीं, बहुरि न धरई तन्न ॥ १ ॥

(१) जीत कर।

सत्तनाम की महिमा जानै । मन बच करमै सरना आनै ॥
एक नाम मन बच करि लेई । बहुरि न या भवजल पग देई ॥
जोग जज्ञ जप तप का करई । दान पुन्न तें काज न सरई ॥
देवी देवा भूत परेता । नाम लेत भाजैं तजि खेता ॥
टोना टामन पूजा पाती । नाम लेत सहजै तरि जाती ॥
जो इच्छा आवै मन माहीं । पुरवै तुरत बिलँब कछु नाहीं ॥
सो सतनाम हृदय अनुरागी । सो कहिये साचा बैरागी ॥
जब लग नाम प्रतीत न करई । तब लग जनम जनम दुख भरई ॥

॥ दोहा ॥

कबीर महिमा नाम की, कहना कही न जाय ।
चार मुक्ति औ चार फल, और परम पद पाय ॥ २ ॥

सत्तनाम है सबतें न्यारा । निर्गुन सर्गुन सबद पसारा ॥
निर्गुन बीज सर्गुन फल फूला । साखा ज्ञान नाम है मूला ॥
मूल गहे तें सब सुख पावै । डाल पात में मूल गँवावै ॥
सतगुरु कही नाम पहिचानी । निर्गुन सर्गुन भेद बखानी ॥

॥ दोहा ॥

नाम सत्त संसार में, और सकल है पोच[1] ।
कहना सुनना देखना, करना सोच असोच ॥ ३ ॥

सब ही झूठ झूठ करि जाना । सत्त नाम को सत कर माना ॥
निसि बासर इक पल नहिं न्यारा । जाने सतगुरु जाननहारा ॥
सुरत निरत ले राखै जहवाँ । पहुँचै अजर अमर घर तहवाँ ॥
सत्तलोक को देय पयाना । चार मुक्ति पावै निर्बाना ॥

॥ दोहा ॥

सत्तलोक सब लोक-पति, सदा समीप प्रमान ।
परम जोति से जोति मिलि, प्रेम सरूप समान ॥ ४ ॥

---

(१) तुच्छ ।

अंस नाम तें फिरि फिरि आवै । पूरन नाम परम पद पावै ॥
नहिं आवै नहिं जाय सो प्रानी । सत्तनाम की जेहि गति जानी ॥
सत्तनाम में रहै समाई । जुग जुग राज करै अधिकाई ॥
सत्त लोक में जाय समाना । सत्त पुरुष से भया मिलाना ॥
हंस सुजान हंस ही पावा । जोग संतावन भया मिलावा ॥
हंसा सुघर दरस दिखलावा । जनम जनम की भूख मिटावा ॥
सुरत सुहागिनि आगे ठाढ़ी । प्रेम सुभाव प्रीति अति बाढ़ी ॥
पुहुप दीप में जाइ समाना । बास सुबास चहूँ दिसि आना ॥

॥ दोहा ॥

सुख सागर सुख बिलसही, मानसरोवर न्हाय ।
कोटि काम सी कामिनी, देखत नैन अघाय ॥ ५ ॥

सूरत नाम सुनै जब काना । हंसा पावै पद निर्बाना ॥
अब तो कृपा करी गुरु देवा । ता तें सुफल भई सब सेवा ॥
नाम दान अब लेय सुभागी । सत्त नाम पावै बड़ भागी ॥
मन बच क्रम चित निस्चय राखै । गुरु के सबद अमी रस चाखै ॥
आदि अंत कै भेदै पावै । पवन आड़ में ले बैठावै ॥
सब जग झूठ नाम इक साचा । स्वास स्वास में साचा राचा ॥
झूठा जानि जगत सुख भोगा । साचा साधू नाम सँजोगा ॥
यह तन माटी इन्द्री छारी । सत्तनाम साचा अधिकारी ॥
नाम प्रताप जुगै जुग भाखी । साध संत ले हिरदे राखी ॥

॥ दोहा ॥

महिमा बड़ी जो साध की, जा के नाम अधार ।
सतगुरु केरी दया तें, उतरे भौजल पार ॥ ६ ॥

(२)

प्रथम एक जो आपै आप । निराकार निर्गुन निर्जाप ॥
नहिं तब भूमी पवन अकासा । नहिं तब पावक नीर निवासा ॥

आवश्यक सूचना

संतबानी पुस्तकमाला के उन महात्माओं की लिस्ट जिनकी जीवनी तथा बानियाँ छप चुकी हैं

कबीर साहिब का अनुराग सागर
कबीर साहिब का बीजक
कबीर साहिब का साखी-संग्रह
कबीर साहिब की शब्दावली—चार भागों में
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते, झूलने
कबीर साहिब की अखरावती
धनी धरमदास की शब्दावली
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) भाग १ 'शब्द'
तुलसी शब्दावली और पद्मसागर भाग २
तुलसी साहिब का रत्नसागर
तुलसी साहिब का घट रामायण—२ भागों में
दादू दयाल भाग १ 'साखी',—भाग २ "पद"
सुन्दरदास का सुन्दर बिलास
पलटू साहिब भाग १ कुंडलियाँ। भाग २ रेख़ते, झूलने, सवैया, अरिल, कवित्त। भाग ३ भजन और साखियाँ।
जगजीवन साहब—२ भागों में
दूलनदास जी की बानी
चरनदास जी की बानी, दो भागों में
गरीबदास जी की बानी
रैदास जी की बानी
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी
भीखा साहिब की शब्दावली
गुलाल साहिब की बानी
बाबा मलूकदास जी की बानी
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी
यारी साहिब की रत्नावली
बुल्ला साहिब का शब्दसार
केशवदास जी की अमीघूँट
धरनीदास जी की बानी
मीराबाई की शब्दावली
सहजोबाई का सहज-प्रकाश
दयाबाई की बानी
संतबानी संग्रह, भाग १ 'साखी',—भाग २ 'शब्द'
अहिल्या बाई (अंग्रेज़ी पद में)

अन्य महात्मा जिनकी जीवनी तथा बानियाँ नहीं मिल सकीं

१ पीपा जी। २ नामदेव जी। ३ सदना जी। ४ सूरदास जी। ५ स्वामी हरिदास जी। ६ नरसी मेहता। ७ नाभा जी। ८ काष्ठजिह्वा स्वामी।

प्रेमी और रसिक जनों से प्रार्थना है कि यदि ऊपर लिखे महात्माओं की असली जीवनी तथा उत्तम और मनोहर साखियाँ या पद जो संतबानी पुस्तकमाला के किसी ग्रन्थ में नहीं छपे हैं मिल सकें तो कृपा पूर्वक नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। इस कष्ट के लिए उनको हार्दिक धन्यवाद दिया जायगा। यदि पाठक महोदय ऊपर लिखे महात्माओं का असली चित्र भी प्राप्त कर सकें, तो उनसे प्रार्थना है कि नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। चित्र प्राप्ति के लिए उचित मूल्य या ख़र्च दिया जायगा।

मैनेजर—संतबानी पुस्तकमाला, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।